इस्लाम
अरब राष्ट्रीयता
का साधन
अनवर शेख़

इस्लाम अरब राष्ट्रीयता का साधन

अनवर शेख 1997

प्रकाशकः ए. घोष पबलिशर्स
5740 डब्लिड, लिटल् इयके
216, हिउस्टन, टेक्सास् 77099
यू, एस. ए.

मूल्य – 20 रु0

सूची

भूमिका

जो मुसलमान अरब नहीं उन्हें इस्लाम ने इतनी हानि पहुँचायी है जो किसी भी दैवी आपत्ति ने नहीं पहुंचाई । फिर भी मुसलमानों को पक्का विश्वास है कि इस्लाम समानता और मानव प्रेम का प्रतीक है ।

2. (क) मुहम्मद ने इस झूठ को बड़ी सरलता से अटल सत्य के रूप में प्रस्तुत किया है । वास्तव में मुहम्मद ने सारी मानव जाति को दो भागों में बांट दिया है – एक ओर अरब और दूसरी ओर सब दूसरे । इस विभाजन के अनुसार अरब तो राज करने वाले हैं । और बाकी सब अरब संस्कृति और साम्राज्यवाद द्वारा अरबों के अधीन रहने योग्य हैं ।

2. (ख) इस्लाम में मानव प्रेम का उल्लेख तो एक ढोंग है । दूसरों के प्रति घृणा ही इस्लाम का मूल आधार है । इस्लाम के अनुसार मुसलमानों को छोड़कर बाकी सब सदा के लिए घोर नरक में जाएगें । इस्लाम का ध्येय मुसलमानों और दूसरों में संघर्ष है जो कार्ल मार्क्स के सामाजिक संघर्ष के तत्व से भी अधिक अनिष्टकारी है । क्योंकि इस्लाम का ध्येय अरबों की महत्ता स्थापित करना है इसलिए इस्लाम को एक मत न कह कर अरब राष्ट्रीय आन्दोलन कहना चाहिए । इसकी सफलता का कारण दूसरे देशों के मुसलमानों का बुद्धि नियंत्रण है जिससे वे अपनी संस्कृति और धरोहर को ठुकरा कर अरबों की महत्ता स्वीकार करने लगते हैं । इस विचारधारा का आधार मुसलमानों के इस अन्ध विश्वास पर है कि मुहम्मद उन्हें स्वर्ग दिलवा सकता है । परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्थान, ईजिप्ट (मिस्र) और ईरान जो संसार के महान देश गिने जाते थे इस्लाम के प्रभाव से अपने गौरव को भूल गए हैं और अब संसार के हीन देशों में गिने जाते हैं । इस पुस्तक का विषय गम्भीर है चाहे कुछ लोग इस से मत के विषय में या राजनैतिक लाभ उठाने का प्रयास करें । यदि वे निष्कपट हैं तो जैसा कि कुरआन में लिखा है उसका पालन करें
'' .... अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो । (2:111) '

इस पुस्तक का विषय मेरी रचना '' संस्कृति और भाग्य '' (जो अभी छपी नहीं) का भाग है । क्योंकि इस पुस्तक का विषय और मत और अन्तर्राष्ट्रीय है इसे अलग से प्रकाशित किया जा रहा है । कुछ बातों को जानबूझकर दोहराया गया है ताकि पाठक उन्हें याद रखें ।

अनवर शेख

पहला अध्याय

राष्ट्रीयता – पैगम्बरी का मूल आधार

यद्यपि यहूदियों और मुसलमानों का मूल एक ही है और इस्लाम के सिद्धान्त यहूदियों के धर्म ग्रन्थों पर आधारित है फिर भी मुसलमानों और यहूदियों में ईंट कुत्ते का बैर है । जो बात उन का संगठन करती है वही उनके झगड़े का कारण है अर्थात् इलहाम (revelation) का सिद्धान्त जोकि सब से पुरानी शामी (semetic) प्रथा है ।

इलहाम के सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि का सर्जनहार भगवान है जो अपनी पूजा करवाना चाहता है । वह अपने पैगम्बर द्वारा मानव जाति को अपनी इच्छा प्रकट करता है । भगवान के संदेश वाहक पैगम्बर की आज्ञा पालन किए बिना मुक्ति नहीं मिल सकती । परिणाम स्वरूप हर नगर, देश आदि का अपना अपना भगवान होता था जिसका प्रतिनिधि मुल्ला राजा होता था । मानव कैसे रहें कैसे खाएं कैसे सोए आदि यह सब आदेश भगवान राजा देता था और राजा (जो भगवान का सेवक था और जिस का अपना कोई प्रभुत्व नहीं) अपनी प्रजा से सब कुछ करवाता था । इस्लाम का यह सिद्धान्त कि राज्य अल्लाह का है और इसको अल्लाह के विधान के अनुसार ही चलाना चाहिए इसी पुरानी शामी प्रथा पर निर्धारित है ।

उदाहरणतया अस्सीरिया (assyria) के राज शल्मनेसर (Shalmneser) को भगवान ने उसके शत्रुओं को समाप्त करने के लिए महान बल दिया जिससे उसने कर्कर के युद्ध में सब शत्रुओं (जिसमें 10000 इस्राईली थे) का नाश कर दिया । दूसरा उदाहरण मरदूक का है जो बैबीलोन का भगवान था । उसके पच्चास नाम थे । माना जाता था कि उसने प्रकृति की और मानव की रचना की थी और वह ही सब राजाओं और उनकी प्रजाओं का भाग्य विधाता था । अस्सीरिया और ईरान के राजा भी मरदुक की आराधना करते थे ।

मरदुक ईआ का पुत्र था । उसने तिआमत नामक दैत्य को मार कर अपनी पदवी प्राप्त की थी । मरदुक के अधीन अनेक देवता थे जैसे कि उतु (सूर्य देवता) जो न्याय का भी संचालक था ।

इसी प्रकार बैबीलोन का प्रसिद्ध न्याय शास्त्र हम्मुराबी वास्तव में राजा का ही विधान था ।

यहूदयों की यह प्रथा जिसमें अधिकारी भगवान का प्रतिनिधित्व बनते थे बड़ी चतुरता से प्रचलित रखी जाती थी । पहले तो भगवान को इतना बलशाली दिखाया जाता था कि जनता उससे भयभीत होकर अधीनता स्वीकार कर ले ।

दूसरे यह मुल्ला राजा (जो पैगम्बरों के पूर्वगामी थे) यह ढोंग रचते थे कि उन्हें राज्य की इच्छा नहीं थी । वे तो केवल भगवान की आज्ञा से उस के प्रतिनिधि बन कर जन सेवा कर रहे थे । उनका उद्देश्य तो भगवान की इच्छापूर्ति था । इस छल से वे लोगों पर मनमाना राज करते थे । इनमें से दो प्रमुख मुसा और मुहम्मद थे (ईसा भी इसी सांचे में ढला था परन्तु उसकी जीवनी का पूरा वृतान्त नहीं मिलता इसीलिए उसकी और व्याख्या करना गलत होगा)

हर पैगम्बर की उच्चाकांक्षा के दो भाग होते हैं – अपनी उच्चाकांक्षा और राष्ट्रीय उच्चाकांक्षा । वह भगवान कहाए बिना भगवान की भांति पूजा जाता है ।

पैगम्बर अपनी जाति से प्रेम करता है और उसकी सुरक्षा और उन्नति का प्रयास करता है । वह जानता है कि नेता बनने के लिए अनुगामियों की आवश्यकता होती है । और नेता की महत्ता अनुगामियों पर निर्भर होती है । अतः पैगम्बर एक कुशल राष्ट्रीय नेता होता है जिसका ध्येय अपनी जाति और देश की उन्नति होता है ।

पहले यहूदियों को देखें ।

मूसा ने यहूदी मत चलाया । मूसा की तीव्र इच्छा थी कि उसका नाम अमर रहे । उसने इस्राईल का भगवान प्रस्तुत किया जो कि इब्राहीम इस्हाक और याकूब का भी भगवान था । मूसा ने यह भी कहा कि वह तो नेता बनना नहीं चाहता था पर विवश होकर नेतृत्व कर रहा है । उसने यह भी कहा कि जब उसने भगवान का प्रतिनिधि बनने से इंकार कर दिया तो भगवान रुष्ट हो गए इसलिए विवश होकर उसे इस पद को स्वीकार करना ही पड़ा ।

हम यहां पुरानी शामी प्रथा का प्रयोग देखते हैं । पहले तो मूसा अपने लोगों के लिए भगवान ढूंढ लाता है फिर भगवान के नाम पर लोगों से आज्ञा मनवाने के लिए स्वयं भगवान का प्रतिनिधि बन जाता है । यह ईस्राइल का भगवान है । यहूदी उसे याह्वे के नाम से पुकारते है । वह अपना नाम नहीं बताता पर कहता है " मैं वह हूं जो मैं हूं " ।

यहूदियों में पैगम्बर नाम मात्र को भगवान का सेवक है । वास्तव में वह भगवान से भी श्रेष्ठ है । यह इस कहानी से स्पष्ट है ।

कहते हैं कि यहूदियों की एक बछड़े की पूजा करने से याह्वे को अत्यन्त ईर्ष्या हुई । वह ईस्राइलियों को अपने क्रोध की अग्नि से भस्म करने के लिए अपने दिव्य तेज के साथ प्रकट हुआ । इस पर मूसा ने याह्वे को डांटा कि यदि वह अपने ही लोगों को नष्ट कर देगा तो मिस्र के लोग क्या कहेंगे क्योंकि याह्वे ने ही तो यहूदियों को मिस्र से मुक्ति दिलाई थी । मूसा याह्वे को यह दुष्ट कर्म न हरने की और पश्चाताप करने की आज्ञा देता है । (exodus 32:12:14) कथानुसार याह्वे मूसा की अधीनता मान लेता है । फिर भी यहूदी कहते हैं कि वे कट्टर ऐश्वर वादी हैं । और भी कई कथाएं हैं जब मूसा ने याह्वे को डांटा और याह्वे ने मूसा की आज्ञा मानी जैसे जब यहूदी मिस्र लौट जाना चाहते थे । (number 14:11-20)

केवल इतना ही नहीं । हर पैगम्बर की महान बनने की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि वह यह भी कहता है कि वह आखिरी पैगम्बर है । उसे बाद कोई और पैगम्बर नहीं होगा । यदि कोई पैगम्बर होने का अधिकार जताए वा तो वह ढोंगी होगा । परन्तु श्रद्धा वाले अनुगामियों के बिना तो मृत्यु पश्चात पूजा नहीं करवाई जा सकती । इसीलिए हर पैगम्बर के लिए राष्ट्रीय नेता होना अनिवार्य है ।

जैसे कि स्पष्ट है हर पैगम्बर अपने भगवान का आविष्कार करता है और यदि कोई और पैगम्बर होने का अधिकार जताए तो अपने द्वन्द्वी के भगवान के स्थान पर अपने भगवान को स्थापित करता है । अस्सा, मरदुक और याह्वे इस उदाहरण का समर्थन करते हैं । और पैगम्बर को कट्टर राष्ट्रीय अनुगामियों की भी आवश्यकता है जो कूटनीति से और बलपूर्वक पैगम्बर का नाम अमर रखें ।

दूसरा अध्याय

पैगम्बर मुहम्मद

मुहम्मद का जन्म मक्का में लगभग सम्वत् 570 में हुआ और देहान्त 8 जून 632 में हुआ । मुहम्मद के कथन के अनुसार सम्वत ईसती 610 में हीरा गुफा में ध्यान करते हुए उसे जिब्रील के दर्शन हुए । जिब्रील के मुहम्मद को अल्लाह का लिखा हुआ सन्देंश पढ़ने को दिया और उसे लोगों को देने को कहा । जब मुहम्मद ने उससे कहा कि उसे तो पढ़ना लिखना नही आता तो जिब्रील ने तीन बार मुहम्मद का गला घोटां ।

जब मुहम्मद ने अपनी पत्नि खादिजा को यह सब वृतान्त सुनाया तो खादिजा ने कहा – तुम्हें अल्लाह ने अपना संदेश वाहक (पैगम्बर) चुना है । इस प्रकार इच्छा नहोते हुए भी मुहम्मद पैगम्बर बना । यह विचित्र बात है किस सर्वज्ञ अल्लाह को इतना भी पता न था कि मुहम्मद अनपढ़ था ं फिर आश्चर्य इस बात का है कि अल्लाह ने मुहम्मद को अपना पैगम्बर चुना किसी विद्वान को नहीं ।

मुहम्मद ने अपने मत का नाम इस्लाम रखा । यद्यपि इंजील में इस बात का कोई प्रमाण नहीं फिर भी मुहम्मद ने कहा कि इस्लाम ही भगवान का दिया हुआ सच्चा मत है । उसके अनुसार इस्लाम कोई नया मत नहीं था किन्तु वही पुराना मत था जिसको फैलाने के लिए भगवान ने आदम, नूह, इब्राहीम मूसा और ईसा को भेजा था । उस मत को यहूदियों ने भ्रष्ट कर दिया था इसीलिए भगवान को मुहम्मद द्वारा उसी सच्चे मत को फैलाना था । । इसी कारण मुहम्मद को यहूदियों की प्रथाओं को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हुई क्योंकि वह तो भगवान के उसी पुराने मत को प्रचलित कर रहा था । उसने अपने मत को इस्लाम का नाम दिया – यहूदी मत और ईसाई मत से भिन्न । उसने यहूदियों का मत परिवर्तन करने का बहुत प्रयास किया । इसीलिए उसने अपने मत के लिए एसे भगवान की आवश्यकता थी जिसे उसकी अपनी जाति वाले अरब तो मानें ही यहूदी भी मान लें ।

यहूदियों का भगवान याह्वे था । इंजील के कुछ भागों से यह आभास होता है कि एक समय याह्वे कई औरों के साथ एल के अधीन था । (deuteronomy 32:8-9) एल को अरबी में अल्लाह कहते थे । इस्लाम के भगवान के लिए इस अच्छा नाम और क्या हो सकता था । अल्लाह याह्वे से उच्चतर था और मुहम्मद के कुरेशों का भगवान था । जिसको काबा का स्वामी कहा जाता था । याद रहे कि शामी प्रथा के अनुसार पैगम्बर भगवान कहानातो नहीं चाहता था पर भगवान जैसी प्रतिष्ठा चाहता है । वह यह भी चाहता है कि उसका नाम अमर रहे । इसलिए उसे निष्ठा वाले अनुगामियों की भी आवश्यकता होती है । मुहम्मद ने अल्लाह को इसलिए चुना क्योंकि उस समय अरब देशों के समाजमें यहूदियों का स्थान ऊंचा था । वह जानता था कि सफलता के लिए यह आवश्यक था कि यहूदी उस के मत को अपनाएं अन्यथा या तो यहूदियों को नीची श्रेणी के नागरिक बनाया जाए या उन्हें देश से निकाल दिया जाए । पहले तो मुहम्मद ने यहूदियों को

अपने साथ मिलाने के लिए उनकी बहुत प्रशंसा की । जेरुसलम को इसलाम का किबला (सर्वोच्च स्थान) माना । यहूदियों को भगवान के चुने हुए लोग कहा । इसीलिए उसने इब्राहीम को जो अरबों और यहूदियों सांझा पूर्वज था आराध्य माना । कुरान में लिखा है :

" ऐ बनी इसराइल । मेरे वे एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किए और यह कि मैंने तुमको दुनिया वालों पर फजीलत बख्शी । " (2:122)

" और उस शख्स से किसका दीन अच्छा हो सकता है , जिस ने खुदा के हुक्म को कुबूल किया और वह भले काम करनेवाला भी है और इब्राहीम के दीन को पैरवी करने वाला भी है , जो यकसू (मुसलमान) थे और खुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था । (4 : 125)

मुहम्मद ने अपने अरब अनुगामियों से यह भी कहा :

" तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसंद किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबों में) तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था । (22 : 78)

जब यहूदियों ने फिर भी इस्लाम नहीं अपनाया तो मुहम्मद ने क्रुद्ध होकर जेरुसलम से हटा कर मक्के के काबे को इस्लाम का किबला (सर्वोच्च स्थान) बना दिया । यहां तक कि उसने यहूदियों को श्राप तक दिया :

" ....

खुदा ने उनके कुफ्र की वजह से उन पर लानत रखी है । (4 : 6)

क्योंकि यहूदी अरब राष्ट्र का भाग नहीं बने उनको श्राप देना ही पर्याप्त नही था । उसलिए मुसलमानों ने उन को देश से निकाल दिया । याद रहे कि इस्लाम एक मत नहीं पर अरब राष्ट्रीय आन्दोलन है ।

मुहम्मद ने अल्लाह को इसीलिए चुना क्योंकि अल्लाह की पदवी याह्वें की पदवी से उच्च थी सो अरब यहूदियों से उच्च हुए । फिर याह्वे तो केवल ईस्राइल का भगवान था । अल्लाह तो याह्वे से श्रेष्ठ बनाने के लिए मुहम्मद ने अल्लाह को सारी सृष्टि का भगवान बनाया – सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक ।

मुहम्मद ने अल्लाह को एक मात्र भगवान इसलिए बनाया था क्योंकि अल्लाह अरबों का था जिसकी मूर्ति की पूजा शताब्दियों से काबे में की जाती थी ।

परन्तु अल्लाह तो बहुत सी दिव्य मूर्तियों में से एक था । काबा एक हिन्दू मंदिर की भान्ति था हिन्दुओं के त्रिमूर्ति के सिद्धान्त पर आधारित । अल्लाह के साथ काबे में उसकी तीन पुत्रियों की भी पूजा होती थी । काबे पर मुहम्मद मे सम्प्रदाय कुरेशों का अधिकार था इसीलिए कुरेशों को " अल्लाह के लोग " कहा जाता था । मुहम्मद ने अल्लाह को एक मात्र भगवान बनाया । उसने यह भी विधान बनाया कि केवल उसके अपने सम्प्रदाय कुरेशों को ही राज करने का अधिकार है ।

मुहम्मद ने कहा :

1– " अल्लाह ने पहले तो अब्राहीम के बेटे ईस्माइल को चुना । फिर इस्माईल की संतति से अल्लाह ने (मुहम्मद के सम्प्रदाय) कुरेशों को चुना । फिर कुरेशों में से अल्लाह ने (मुहम्मद के वंश) बानू हाशिम को चुना और फिर बानू हाशिम में से अल्लाह ने सब से अच्छे पुरुष मुहम्मद को चुना । " (james Tirmze' Vol: 2)

यह कथन यहूदियों के कथन (Genesis 17:19-20) के विपरीत है । यहूदियों का दृढ़ विश्वास है कि इब्राहीम का उसकी विवाहिता पत्नी साराह द्वारा एक ही पुत्र था इस्हाक । इस्माईल तो इब्राहीम का हागर (मिस्र से आई हुई एक दासी) द्वारा पुत्र था। भगवान का समझौता इसहाक से था इस्माईल से नहीं । इस्लाम में इस्माईल की संतति (अरबों) को यहूदियों से उच्च मानना तो अरब राष्ट्रीयता के कारण ही था ताकि अरब यहूदियों से उच्चतर मानें जाएं ।

2. अल्लाह ने इस्माईल और इस्हाक की सन्ततियों की दो जातियों को सर्वोच्च चुना । फिर अल्लाह ने इस्माईल की सन्तति (अरबों) को यहूदियों से श्रेष्ठ माना । फिर अल्लाह ने कुरैश सम्प्रदाय को

चुना और फिर अल्लाह ने कुरेशों में से सब से अच्छे परिवार में सब से अच्छे पुरुष मुहम्मद को जन्म दिया ।

3. जब लोगों ने मुहम्मद से पूछा कि उसको पैगम्बर कब बनाया गया तो उसने उत्तर दिया कि जब आदम के शरीर और आत्मा का निर्माण हो रहा था ।(james Tirmze' Vol: 2)

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है मुहम्मद को जिब्रील के दर्शन 40 साल की आयु में हुए जब उसने विवश होकर पैगम्बर बनना स्वीकार किया । आश्चर्य है कि यदि मुहम्मद आदम से भी पहले पैगम्बर था तो उसने 40 साल तक पैगम्बर होने का अधिकार क्यों नहीं जताया और नहीं उसने पहले 40 साल मत प्रचार की कोई बात भी की ।

4. अल्लाह ने मुहम्मद को सर्वश्रेष्ठ पुरुष चुना है । यह अटल सत्य है । (james Tirmze' Vol: 2)

5. .... कियामत (Day of judgement) पर मुहम्मद अल्लाह के दाई ओर बैठेगा । किसी भी और को यह अधिकार नहीं होगा । (Jame Tirmiz, Vol 2)

6. कियामत पर मुहम्मद (जो तुम्हारे पापों को क्षमा करवा सकता है) की शरण में जाओ । केवल ही स्वर्ग दिलवा सकेगा । (Jame Tirmiz, Vol 2)

7. कियामत पर मुहम्मद लोगों का मुखिया होगा । (Jame Tirmiz, Vol 2)

8. मुहम्मद वह पहला व्यक्ति है जो अल्लाह और पुरुषों में मध्यस्थ होगा । वह पहला व्यक्ति है जिस की मध्यस्थता को अल्लाह स्वीकार करेगा । मुहम्मद ही स्वर्ग के द्वार खोल कर पहले स्वयम् प्रवेश करेगा फिर अपने अनुगामियों को स्वर्ग दिलवाएगा । वह आदि काल से अनन्त काल तक सब पुरुषों में श्रेष्ठ है ।

9. मुहम्मद की प्रशंसा करो और उससे प्रार्थना करो । जो भी ऐसा करता है अल्लाह उसे दस गुना सम्पन्न करता है । (Jame Tirmiz, Vol 2)

मुहम्मद के इन रूढ़ीवादों को समझने के लिए उसका अल्लाह के साथ सम्बन्ध जानना आवश्यक है ।

उदाहरणतया :

1. शहादा इस्लाम का मूल सिद्धान्त है । यही किसी को मुसलमान बनाता है । अर्थात्

अल्लाह के अतिरिक्त किसी को भी पूजे जाने का अधिकार नहीं है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है ।

इसको समझने के लिए दो भागों में बाँटा जाए । इस प्रकार :

अल्लाह के अधिकारः

" जो ईमान वाले हैं, वे तो खुदा ही के सबसे ज्यादा दोस्तदार हैं । " (2 : 165)

" सब तारीफ खुदा ए रब्बुल आलमीन ही के लिए । " (6 : 45)

ख. अल्लाह ने अपना पूज्य होने का अधिकार कुरआन में स्पष्ट बताया है ।

" और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसीलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें ।

कुरआन में कई स्थानों पर अल्लाह कहता है कि उसने मनुष्यों को केवल इसीलिए बनाया है कि वे अल्लाह की पूजा करें । आश्चर्य इस बात का है कि अल्लाह सब का निर्माता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होते हुए भी मनुष्यों से पैगम्बर भेजे बिना, नरक के डर बिना और स्वर्ग के प्रलोभन बिना अपनी पूजा नहीं करवा सकता ।

इस्लाम में शिर्क अर्थात् अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पूजना सब से बड़ा पाप है । यदि अल्लाह सबका निर्माता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है जिसको पूजे जाने की इतनी इच्छा है तो वह निश्चय ही आज्ञाकारी मनुष्य बना सकता था । विदित है कि अल्लाह को नहीं पर पैगम्बर को भगवान की भान्ति पूजे जाने की इच्छा है ।

शहादा के दूसरे भाग के अनुसार :

2. पैगम्बर के अधिकार :

क. यद्यपि मुहम्मद अपने आप को अल्लाह का दास कहता है फिर भी वह अल्लाह के विधान से ऊपर था । कोई मुसलमान एक समय चार से अधिक पत्नियाँ नही रख सकता पर मुहम्मद की एक ही समय नौ पत्नियाँ थी ।
ख. पैगम्बर को अल्लाह की अनुमति है कि वह किसी को भी तलाक दी हुई पत्नि या विधवा से विवाह करे, पर यदि कोई और पैगम्बर की तलाक दी हुई पत्नि या विधवा से विवाह करे तो यह पाप होगा ।
ग. हर मुसलमान को आदेश है कि वह अपनी हर एक पत्नि से एक जैसा व्यवहार करे परन्तु पैगम्बर जब चाहे अपनी किसी भी पत्नि को स्थगित कर सकता है ।
घ. अल्लाह पैगम्बर को प्रसन्न रखना चाहता है । वह मुसलमानों को आदेश देता है कि मुसलमान पैगम्बर के घर कैसें जाएं, कितना समय ठहरें और वहाँ व्यर्थ बातें न करें । (ख, ग और घ के आधार कुरआन की 33 : 50, 33 : 41 और 33 : 53 आयतों पर हैं जो कि इस प्रकार हैं ।)

ऐ पैगम्बर ! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीबियाँ, जिन को तुमने उन के महर दे दिए हैं, हलाल कर दी हैं और तुम्हारी लौडियां, जो खुदा ने तुम को (काफिरों के गनीमत के माल के तौर पर) दिलवायी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी खालाओं की बेटियाँ, जो तुम्हारे साथ वतन छोड़ कर आयी हैं सब हलाल है और कोई मोमिन औरत अगर अपने आप पैगम्बर को बख्शी दे (यदि महर लेने के बगैर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैगम्बर भी उससे निकाह करना चाहें, (वह भी हलाल है, लेकिन यह इजाजत) हे मुहम्मद ! खास तुम्ही को है, सब मुसलमानों को नहीं, हम ने उन की बीबीयों और लौडियों के बारे में जो (महर, अदा करने के लिए जरूरी) मुकर्रर कर दिया है, हम को मालूम है (यह) इसीलिए किया गया है कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे और खुदा बख्शने वाल मेहरबान है । (50) (और तुमको यह अख्तियार है) जिस बीबी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुमने अलाहिदा कर दिया हो , अगर उसको फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं । यह (इजाजत) इसलिए है कि उन की आखें ठंडी रहें और वे गमनाक नहों और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब खुश रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, खुदा उसे जानता है और खुदा जानने वाल (और) बुर्दबार (हलीम) है । (51)

मोमिनो ! पैगम्बर के घरों में न जाया करो, मगर इस सूरत में कि तुम को खाने की हजाजत दी जाए और उस के पकने का इन्तिजार भी न करना पड़े, लेकिन जब तुम्हारी दावत की आए जो जाओ और जब खाना खा चुको, तो चल दो और बातों में जी लगा कर न बैठ रहो । यह बात पैगम्बर को तकलीफ देती है और वह तुमसे शर्म करते थें, (और कहते नहीं थे) , लेकिन खुदा सच्ची बात के कहने से शर्म नही करता और जब पैगम्बर की बीबियों से कोई सामान मांगो, तो पर्दे के बाहर मांगो । ये तुम्हारे और उन दोनों के दिलों के लिए बहुत पाकीजगी की बात है और तुम को यह मुनासिब नहीं कि पैगम्बर खुदा को तक्लीफ दो न यह कि उन की बीबियों से कभी उनके बाद निकाह करो । बेशक यह खुदा के नजदीक बड़ा (गुनाह का काम है ।) (53)
च. जैसे मैं अगले भाग में बताउंगा, अल्लाह ने मुहम्मद को प्रसन्न करनेके लिए पूजा करने की दिशा को बदल दिया । एक दिव्य विधान मं यह महत्वपूर्ण परिवर्तन था ।
(ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हारा आसमान की तरफ मुंह फेर फेर कर देखना देख रहे हैं । सो हम तुमको उसी किब्ले की तरफ, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुंह करने का हुक्म देंगे । तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी खाना ऐ काबा) की तरफ फेर लो । और तुम लोग जहाँ हुआ करो (

नमाज पढ़ने के वक्त) उसी मस्जिद की तरफ मुंह कर लिया करों । और जिन लोगों को किताब दी गयी है वे खूब जानते हैं कि (नया किब्ला) उनके परवरदिगार की तरफ से हक है और जो काम ये लोग करते हैं, खुदा उन से बेखबर नहीं (2:144)
छ. जब हालो की बेटी खैला ने मुहम्मद को विवाह का प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो मुहम्मद की पत्नि आयशा को अच्छा नहीं लगा । पर जब अल्लाह ने मुहम्मद से कहा :
" .... तुम जिस बीबी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो । " (33 : 51)
तो आइशा बोली : " अल्लाह तुम्हें प्रसन्न करने के लिए उत्सुक है ". (Sahih Al Bokhari Vol: 7)
ज. वास्तव में अल्लाह मुहम्मद के कार्यकर्ता के भान्ति है क्योंकि वह मुसलमानों को आदेश देता है कि वे मुहम्मद के आगे न चलें और उससे ऊंचा न बोलें ।
" मोमिनों ! (किसी बात के जवाब में) खुदा और उस के रसूल से पहले न बोलउठा करो और खुदा से डरते रहो । बेशक खुदा सुनना जानता है । (1) ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाजें पैगम्बर की आवाज से ऊंची न करो और जिस तरह आपस में एक दूसरे से जोर से बोलते हो (उस तरह) उनके सामने जोर न बोला करो । (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हों जाएं और तुमको खबर भी नहो । (2) " (49: 1–2)
यदि ध्यान से देखा जाए तो यह स्पष्ट है कि कुरआन में पहले तो मुहम्मद मनुष्य है किन्तु धीरे धीरे मूसा की भान्ति वह अल्लाह से भी श्रेष्ठ प्रतीत होता है । मुहम्मद की मनुष्य से अल्लाल समान बनने की विधि संक्षेप में इस प्रकार थी ।
1. हर एक मुसलमान के लिए आवश्यक था कि वह अल्लाह से प्रेम करे परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं । जब तक कोई मुहम्मद से " अपने पिता, बच्चों और मानव जाति से अधिक प्रेम न हीं करता । " वह मुसलमान नहीं. (Sahih Al Bokhari Vol: 1)
2. मुहम्मद अल्लाह की भातिं महान है क्योंकि उसमें अल्लाह की भान्ति 99 गुण हैं (क) जैसे अल्लाह सर्वव्यापक होने के नाते मनुष्य के समीप है उसी प्रकार " पैगम्बर मोमिनों पर उनकी जानों से भी ज्यादा हक रखते हैं .... " (33 : 6)
3. आरम्भ में मुहम्मद मृत्युलोक के प्राणी की भान्ति और अल्लाह के सेवक के रूप में है पर धीरे धीरे मुहम्मद की सत्ता बढ़ती जाती है और अल्लाह की आज्ञा पालन की भान्ति मुहम्मद की आज्ञा पालन भी आवश्यक हो जाती है ।
क. कह दो खुदा और उसके रसूल का हुक्म मानों । (3 : 32)
और खुदा और उस के रसूल की इताअत करो .... । (3 : 132)
ख. और ओ आदमी खुदा और उसके पैगम्बर की फरमांबरदारी करेगा, खुदा उसको जन्नतों में दाखिल करेगा । (4 : 13)
ग. धीरे धीरे मुहम्मद अल्लाह का समाधिकारी बन जाता है ।
" और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हम नहीं है कि जब खुदा और उसका रसूल कोई उम्र मुकर्रर कर दे, तो वे इस काम में अपना भी कुछ अख्तियार समझें और जो कोई खुदा और उस के रसूल की नाफरमानी करें, वह खुला गुमराह हो गया । (33 : 36)
अपने आप को अल्लाह का समनिर्देशक बना कर मुहम्मद अपने गुणों की प्रशंसा करता है । जैसे :
घ. और (ऐ मुहम्मद !) हमने तुमको तमाम दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है । (21 : 107)
च. कुरआन में मुहम्मद को आदर्श व्यक्ति कहा गया है ताकि सभी मुहम्मद की आज्ञा का पालन करें ।

" तुमको खुदा के पैगम्बर की पैरवी करना बेहतर है, (यानी) उस शख्स की जिसे खुदा (से मिलने) और कयामत के दिन (के आने) की उम्मीद हो वह खुदा का जिक्र ज्यादा से ज्यादा करता हो । (33 : 21)
छ. पहले तो मुहम्मद में मध्यस्थता की कोई भी शक्ति नहीं थी । वह तो अपनी चहेती बेटी फातिमा को बचाने में असमर्थ था । फिर अपनी पैगम्बरी सिद्ध करने के लिए उसने अपनी पदवी भगवान के समान बना ली ।

कि बेशक यह (कुरआन) बुलंद दर्जा फरिश्ते की जुबान का पैगाम है, (16) जो ताकत वाला, अर्श के मालिक के यहाँ ऊंचे दर्जे वाला, (20) सरदार (और) अमानतदार है । (81 : 19 – 21)
शताब्दियों से कुरआन की इस आयत का अर्थ यह माना गया है कि कियामत पर मुहम्मद अल्लाह के दाहिनी ओर बैठेगा । अल्लाह सब अधिकार मुहम्मद को दे देगा और मुहम्मद यह निर्णय करेगा कि कौन नरक जाएगा और कौन स्वर्ग जाएगा । निर्णय कर्मों के अनुसार नहीं होगा , वरन किन को मुहम्मद से कितना प्रेम था । यहूदी और ईसाई सभी नरक जाएगें । हिन्दुओं, बौद्धों और नास्तिकों की भी यही दशा होगी । पर सब चोर, हत्यारे, बलात्कारी आदि जिन्होनें जीवन में एक बार भी मुहम्मद का नाम प्रेम से लिया था और उसको पैगम्बर माना था स्वर्ग जाएगें । स्वर्ग में एक एक को वासना पूर्ति के लिए सत्तर सुन्दर कुमारी कन्याएं और अनगिनत लड़के मिलेगें और उनका पुरुषत्व सौ गुना हो जाएगा । इस बात को सब मुसलमान मानते हैं । मैं ने कुछ बढ़ा चढ़ा कर नहीं लिखा ।
ज. धीरे धीरे मुहम्मद की सत्ता अल्लाह की सत्ता से भी अधिक हो जाती है :
" खुदा और उसके फरिश्ते पैगम्बर पर दरूद भेजते हैं । मोमिनो ! तुम भी पैगम्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो । " (33 : 56)
मुसलमान कहते तो हैं कि अल्लाह के साथ किसी और की पूजा करना महा पाप है परन्तु वास्तव में वे अल्लाह के नाम पर मुहम्मद की पूजा करते हैं ।
यह अद्‌भुत बात है कि भगवान की पूजा के स्थान पर भगवान और सब देवदूत एक मनुष्य की पूजा करते हैं । इलहाम (पैगम्बरी) का यही तो उद्‌देश्य है । यह स्पष्ट है कि इलहाम का उद्‌देश्य ही यह है कि सत्ता चाहने वाला व्यक्ति जो अपनी पूजा करवाना चाहता है अपने आप को घूम घुमा कर भगवान के रूप में प्रस्तुत करता है ।
अपनी ईश्वरीय सत्ता को दृढ़ करने के लिए वह बच्चे को जन्म से ही अल्लाह के पैगम्बर का पाठ पढ़ाता है । इलहाम बुद्धि नियंत्रण का सर्वोत्तम साधन है क्योंकि इससे विवेक सब द्वार बन्द किए जा सकते हैं ।
कुरआन का अल्लाह अपनी प्रशंसा करवाने को विवश है । (49 : 23–24)
यहां पर मनुष्य नहीं अल्लाह स्वयं ही अपनी प्रशंसा कर रहा है । विदित है कि अल्लाह अपनी प्रशंसा चाहता है । वह अपनी प्रशंसा करवाने के लिए वह जो करता है वह सदाचार के विपरीत है । वह अपनी प्रशंसा करवाने के लिए स्वर्ग में सुन्दर कन्याएं और लड़के दिलाने का प्रलोभन देता है । जो भी उससे सहमत नहीं है उनको नरक की अग्नि का डर दिखाता है और बार बार दोहराता है उस के बदले के दण्ड की कोई सीमा नहीं । वह कहता है कि जो भी उसको नहीं मानते वे सब हत्या के योग्य हैं जब तक वे अल्लाह के प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करते ।
क्या यह ही भगवान के गुण हैं ? ऐसा भगवान तो जगनिर्माता नहीं हो सकता । यदि होता तो वह ऐसे मनुष्यों का निर्माण करता जो उसकी पूजा और प्रशंसा करते क्योंकि ऐसा न होने से वह दुखी होता है । यदि वह स्वयं अपने आप को आनन्दित नहीं रख सकता तो वह औरों को आनन्द कैसे दे सकता है ? जब उसका अपना आनन्द मनुष्य के कर्मों पर निर्भर है तो वह भगवान नहीं हो सकता । मुसलमानों में मुहम्मद की जनप्रियता के तीन कारण हैं ।

1. मुहम्मद परिस्थितियों का लाभ उठाने में बहुत चतुर था । उस का ध्येय अरबों का साम्राज्यवाद स्थापन करना था । **लोग भूल जाते हैं कि मुहम्मद केवल पैगम्बर ही नहीं था । वह अरब साम्राज्य का निर्माता भी था ।**
2. दूसरे, मुहम्मद ने इस्लाम अपने नाम से चलाया । इसके लिए :
क – उसने अपने आप को दया का प्रतीक कहा , दुनिया के लिए रहमत । (21 : 107)
ख – उसने आदेश दिया कि उसकी आज्ञा का पालन अल्लाह की आज्ञा का पालन है ।
ग – उसने कहा कि वह अपने सब अनुगामियों को स्वर्ग दिला सकता है जहां वे सदा सुख और आनन्द से रहेंगे । यह तो सब को बहुत पसन्द आया ।
घ. वह अत्यन्त सफल राष्ट्रवादी था । जिस प्रकार उसने सब दूसरों पर अरबों की संस्कृति ठूंसी वह अरबों के दृष्टिकोण से सराहनीय है ।

इस्लाम वास्तव में अरब राष्ट्रीयता का साधन है इस विषय पर किसी और ने व्याख्या नहीं की इसलिए मुझे इस विषय पर विस्तार से लिखना चाहिए । इस राष्ट्रीयवाद का मुख्य साधन मुहम्मद का यह कथन था कि उस को भगवान ने मुसलमानों के लिए आदर्श व्यक्ति बनाकर भेजा था । (33 : 21)

हर मुसलमान के लिए यह अनिवार्य है कि वह मुहम्मद को आदर्श व्यक्ति मान कर सब कुछ उसकी ही भांति करे । मुहम्मद ने अरबों के हित और दूसरे मुसलामानों के अनहित के लिए इसका बड़ी चतुरता से प्रयोग किया । इस बात का कि मुहम्मद एक अरब साम्राज्यवादी था प्रमाण निम्नलिखित है ।

1. अबु हुरैरा के कथन अनुसार जब अल्लाह ने कहा " अपने सम्बन्धियों को चेतावनी दो " तो मुहम्मद ने उच्च स्वर में कहा : ओ कुरेशों ! मुहम्मद ने अपने सम्प्रदाय को सर्वोच्च पदवी दी । हदीस में लिखा हैः " अल्लाह ने इब्राहीम के पुत्र इस्माईल को चुना । फिर इस्माईल की संतति में से मुहम्मद के सम्प्रदाय कुरेश को चुना । कुरेश जाति में से अल्लाह ने मुहम्मद के वंश बानू हाशिम को सर्वोत्तम मान कर चुना और फिर उसमें से अल्लाह ने सर्वोत्तम पुरुष मुहम्मद को चुना .... " ।

यहूदी अपनी जाति को भगवान की चुनी हुई सर्वश्रेष्ठ जाति मानते हैं । इसी प्रकार मुहम्मद ने अपनी जाति , सम्प्रदाय और वंश को सर्वश्रेष्ठ कहा है ।

जैसे कि पहले लिखा है एक पैगम्बर को अपनी सत्ता मनवाने के लिए और अपने नाम अमर करने के लिए प्रबल राष्ट्रीय लोगों की आवश्यकता होती है। इसीलिए मूसा ने याह्वे के आधार पर यहूदी राष्ट्र का निर्माण किया था । मुहम्मद ने अल्लाह के आधार पर यह ही किया वह अपने वंश बानू हाशिम को सर्वोत्तम पदवी देना चाहता था पर उनकी संख्या कम होने के कारण मुहम्मद ने अपने सम्प्रदाय कुरेश (जिनकी संख्या पर्याप्त थी) को महत्व दिया ।
2. जिस प्रकार मूसा ने यहूदियों को भगवान की चुनी सर्वश्रेष्ठ जाति कहा उसी प्रकार मुहम्मद ने अपने सम्प्रदाय कुरेश को अल्लाह के चुने हुए सर्वश्रेष्ठ सम्प्रदाय की संज्ञा दी और फिर कहा :
क– " जो भी कुरेशों का मान मर्दन करेंगे अल्लाह उन को नष्ट कर देगा । (james Tirmze' Vol: 2)
ख– " अल्लाह, जब कुरेशों मुहम्मद का विरोध किया तो तुम ने उन्हें घोर यातना दी । अब उन को इसलोक और परलोक दोनों के पुण्य फल दो । (james Tirmze' Vol: 2)
ग– मुहम्मद के आदेश पर उस मान ने लेखकों को कुरेशों की भाषा में कुरआन लिखने को कहा । (Sahih Al Bokhari Vol: 1) इससे स्पष्ट होता है कि कुरान कुरेशों की भाषा में है दूसरे अरब लोगों की भाषा में नहीं ।
घ – केवल कुरेशों को राज करने का अधिकार होगा ओर कुरेशों का विरोध करने वालों को अल्लाह नष्ट कर देगा । (Sahih Al Bokhari Vol: 1)

च – कुरेश कियामत के दिन तक राज करेंगे चाहे व सदाचारी हो या दुराचारी ।
छ – चाहे दो ही कुरेश बचे हों , राज करने का अधिकार उनको ही होगा ।

इन हदीसों का महत्व निम्नलिखित बातों से स्पष्ट है ।

1. स्पेन में अरबों के 800 वर्ष के राज्य में सभी राजा कुरेश सम्प्रदाय के थे । कारण केवल यह था कि इस्लाम में मुहम्मद के सम्प्रदाय कुरेशों को ही राजा बनने का अधिकारी माना जाता था ।
2. सहीह अलबुर्खरी के आठंवे भाग में स्पष्ट प्रकार से कुरेशों का राजा बनने के अधिकार और दूसरे सब को इस अधिकार से वंचित रखने का उल्लेख है । किसी भी मुसलमान को जो अरब नहीं राज करने का अधिकार नहीं । स्पष्ट है कि इस्लाम जातिवादी मत है और इसमें समानता और प्रजातंत्र तो हैं ही नहीं । आश्चर्य है कि फिर भी हिन्दुस्थान, पाकिस्तान, बंग्लादेश और अफ्रीका के मुसलमान अपनी संस्कृति और राष्ट्रीयता को अस्वीकार करते हैं और अपने आप को केवल मुसलमान मानते हैं । इसीलिए उन का अपना कोई इतिहास नहीं । वे तो अरबों के इतिहास के आधार पर ही जीवित हैं चाहे वह इतिहास कितना ही घटिया ही क्यों न हो । मुहम्मद के देहान्त पर उसके उत्तराधिकार की समस्या गम्भीर बनी । मदीना के अनुसार सम्प्रदाय ने (जिन्होंने मुहम्मद को मदीने में शरण दी थी । मांग की है कि राज्य का विभाजन हो । एक राजा के अंसारों में से हो और एक राजा कुरेशों में से हो । अबूबकर ने कहा कि राज्य का उत्तराधिकारियों तो कुरेश ही होगा जैसा कि मुहम्मद ने कहा था । अंसार के लोगों चाहे तुम कितने ही श्रेष्ठ क्यों न हो राज्य तो मुहम्मद के सम्प्रदाय कुरेशों को ही मिलेगा । जब समस्या कठिन प्रतीत हुई तो ओमर ने एक चाल चली । उसने अबू बकर को अपना हाथ बढ़ाने को कहा और जैसे ही यह हुआ । ओमर ने अबूबकर को अपनी राजनिष्ठा अर्पण की । इस पर मक्के के दूसरे अरबों ने भी इसे स्वीकार किया । अंसारों को इस्लाम की एकता भंग न करने के डर से कुरेशों की राज्यसत्ता को विवशता पूर्वक मानना ही पड़ा जिससे अबू बकर पहला खलीफा बना ।

स्पष्ट है कि मुहम्मद सर्वप्रथम कुरेश और उसके बाद ही अरब था । उस की राष्ट्रीयता यहूदियों की राष्ट्रीयता से भी सीमित थी । यहूदियों में तो सर्व सहमति से कोई भी राज बन सकता था ।

जाति और जन्मस्थान राष्ट्रीयता के दो प्रमुख अंश हैं । अब मै मक्का और अरब देश के प्रति मुहम्मद के विचार प्रस्तुत करता हूँ ।

1. जो कोई भी अरब देशों का विरोध करेगा वह मेरा प्रिय नहीं होगा और मैं उसके लिए अल्लाह से मध्यस्थता नहीं करूँगा । (james Tirmze' Vol: 2)
2. मुहम्मद ने सुलेमान फारसी (जिसने कुशलता से इस्लाम के हित में युद्ध किया था) को कहा था : यदि तुम अरबों के प्रति दुर्भाव रखते हो तो तुम मेरे प्रति भी दुर्भाव रखते हो । (james Tirmze' Vol: 2)
3. मुहम्मद ने अपने जन्मस्थान मक्के के विषय में कहा : " अल्लाह ने मक्के को संसार का सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाया है । मुझे मक्का सारे संसार से अधिक प्रिय है । (james Tirmze' Vol: 2)
4. मक्का सबसे अच्छा स्थान है और मुझे सब स्थानों से अधिक प्रिय है ।यदि मुझे कुरेशों ने मक्के से न निकाला होता तो मैं कहीं और न रहता । (james Tirmze' Vol: 2)

मुहम्मद ने मक्के और अरब देश को संसार के सर्वोच्च स्थान बनाने के लिए क्या नहीं किया । **उसने विचार किया कि ईसाई कहीं का भी निवासी हो वह जेरुसलम को अपने देश से श्रेष्ठ मानता है । क्यों न मक्के को भी ऐसा महत्व दिया जाए जिससे सारे अरब देश का मान बढ़ जाए ।**

यहूदी सदा ही अपने परिश्रम से धनी बनते थे और हर समाज में उनका बोलबाला था । यही स्थिति अरब में भी थी । पहले तो मुहम्मद ने यहूदियों को अपने साथ मिलाने के लिए जेरूसलम को इस्लाम का किबला घोषित कर दिया जिस ओर मुख कर के मुसलमान प्रार्थना करें

। कुरआन में बार बार दोहराया गया है कि अल्लाह ने यहूदियों को सर्वश्रेष्ठ चुना है । परन्तु इन बातों का उल्टा परिणाम हुआ और यहूदियों ने मुहम्मद के विरुद्ध कुरेशों का साथ दिया । जब मुहम्मद विजयी होकर मक्के लौटा तो उसने अपने सम्प्रदाय को तो क्षमा कर दिया परन्तु यहूदियों का तिरस्कार किया ।

इस बात के बहुत प्रमाण हैं कि मुहम्मद का ध्येय यहूदियों, बिजैनटेनियों, ईरानियों और तुर्कों से भिन्न एक अरब राष्ट्र की स्थापना था । उसका समानता का संदेश तो छद्म है वास्तव में वह राष्ट्रीयता है । प्रमाण प्रस्तुत हैः

1. मुहम्मद ने कहा कि मेरे जो भी अनुगामी पहले इस्तम्बूल पर आक्रमण करेंगे उनके सब पाप क्षमा होंगे और वे स्वर्ग जाएगें । (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

2. मुहम्मद ने कहा कि शीघ्र ही अरबों का तुर्कों से युद्ध होगा । (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

3. मुहम्मद ने कहा कि ईरान के राष्ट्रपति खुसरों और उसके कुल का विनाश कर के अरब अल्लाह के नाम पर उसकी सम्पत्ति का भोग करेंगे । ***उसने यह भी कहा कि युद्ध का अर्थ ही धोखा है ।*** (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

4. मुहम्मद मुसलमानों के रूप को यहूदियों और इसहिओं से भिन्न चाहता था । उसने कहा : यहूदी और ईसाई अपने श्वेत बालों को नहीं रंगते । इसलिए तुम रंगा करो । (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

5. मुहम्मद नहीं चाहता था कि अरब दूसरों की वेश भूषा को अपनाएं । जब मुहम्मद ने अमर के बेटे अब्दुल्लाह को केसरी रंग के कपड़ों में देखा तो उसे ऐसे कपड़े पहनने से मना कर दिया ।
केसरी रंग के कपड़े हिन्दु और बुद्ध संत पहनते हैं । उस समय बुद्ध धर्म ईरान और अरबों में फैला हुआ था ।

6. मुहम्मद की राष्ट्रीयता उसके यहूदियों के व्यवहार से स्पष्ट है ।

क – यहूदियों की भाषा हिब्रू का प्रभाव कम करने के लिए मुहम्मद ने मुसलमानों को आदेश दिया कि वे केवल कुरआन (जो केवल अरबी में था) को मानें , इंजील के कथन को नहीं । (3 : 84)

" रोशन किताब की कसम, कि हमने इस को अरबी कुरआन बनाया है, ताकि तुम समझो । " (43: 2–3)

इस आयत के दो भाव हैं :

1. कुरआन इस लिए अरबी में है कि अरब इसे समझ सकें । इसे दूसरे समझे या न समझें इसका कोई महत्व नहीं है ।

2. क्योंकि कुरआन अरबी में है इसलिए अरबी ही अरबों के लिए श्रेयस्कर भाषा है । अरब देश में रहने वाले यहूदी अपने धर्म ग्रंथ को हिब्रू में पढ़ते थे और अरबी में समझाते थ । मुहम्मद ने अरबों को हिब्रू का बहिष्कार करने को और अरबी को अपनी भाषा बनाने को कहा ।

ख – जब यहूदियों ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया तो मुहम्मद ने उन से अत्यन्त कड़ा व्यवहार किया ।

1. मुहम्मद ने इस्लाम के किबले (सर्वोच्च स्थान) की पदवी जेरूसलम से हटा कर मक्के को दे दी । अल्लाह ने यह परिवर्तन मुहम्मद को प्रसन्न करने के लिए किया जैसा कि इस आयत में वर्णन है ।

" (ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हारा आसमान की तरफ मुंह फेर फेर कर देखना चाहते है । सो हम तुमको उसी किब्ले की तरफ, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुहं करने का हुक्म देंगे । तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी खाना ए काब) की तरफ फेर लो । और तुम लोग जहां हुआ करो (नमाज पढ़ने के वक्त) इसी मस्जिद की तरफ मुंह कर लिया करो । " (2 : 144)

इस परिवर्तन का असली कारण अरबों की महत्ता स्थापित करना था । दूसरे देशों के सब मुसलमानों को अल्लाह का आदेश कि वे अरबों को श्रेष्ठ स्वीकार करें । परिणामस्वरूप सारे संसार

के मुसलमान मक्के की तरफ मुंह कर के प्रार्थना करते हैं । हर मुसलमान के लिए यह भी आदेश है कि यदि समर्थ हो तो जीवन में एक बार तो मक्के अवश्य जाए । उनके अपने देशों के धर्मस्थान मक्के से घटिया हैं ।

काबा संसार के सभी स्थानों से अधिक श्रद्धा लेता है । काबे के प्रति श्रद्धा का अर्थ है अरबों के प्रति श्रद्धा । मुसलमानों का कथन है कि मुहम्मद ने पहले जेरूसलम को किबला (सर्वश्रेष्ठ स्थान) इसलिए नियुक्त किया था क्योंकि उस समय काबे में मूर्ति पूजा होती थी जिससे अल्लाह को घृणा है । इस का कोई सर्मथन नहीं है । काबे को किवला 624 ईस्वी में बनाया गया था । उस समय काबें में कुरेश अल्लाह के साथ कई मूर्तियों की पूजा करते थे । केवल 630 में जब मुहम्मद विजयी होकर मक्के लौटा तो काबे से मूर्तियों को निकाला गया था ।

कुरआन के अनुसार अल्लाह मूर्ति पूजा से (जो सबसे बड़ा पाप है) घृणा करता है । फिर यह क्यों कि सर्वशक्तिमान अल्लाह एक सहस्र वर्ष काबे से मूर्तियों को निकाल न पाया और उसे मुहम्मद के आगमन की प्रतीक्षा करनी पड़ी । स्पष्ट है कि अल्लाह का अपना तो कोई अस्तित्व ही नहीं । वह तो केवल अरबों की महत्ता का साधन है । इसीलिए वह अरबों को ही अरबों में कुरआन का संदेश देता है ।

ध – इंजील में यहूदियों को अरबों से श्रेष्ठ बताया गया है क्योंकि यहूदी इस्हाक (इब्राहीम का उसकी विवाहिता पत्नी साराह से पुत्र) की संतति है और अरब इस्माईल (इब्राहीम का हागर नाम की मिस्री दासी से पुत्र है) की संतति है ।

इंजील के अनुसार भगवान का समझौता इस्माईल के साथ नही वरन् इस्हाक के साथ था । पर मुहम्मद ने उस को उलट दिया है । 1. काबे की रचना इब्राहीम और इस्माईल ने की थी । 2. काबे में इब्राहीम और इस्माईल ने भगवान से प्रार्थना की थी कि उनकी संतति का भगवान राष्ट्र प्रेमी हो ।

3. भगवान उन्हें ज्ञानग्रंथ (कुरआन) की शिक्षा के लिए पैगम्बर (मुहम्मद भेजे) । (2 : 127 – 129) यह राष्ट्रीयता नहीं तो और क्या है जब यहूदियों के वैभव को अरबों का कह कर बताया जाए ?

इसका कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि इब्राहीम कभी भी मक्के गया था । इंजील और पुरातत्व के अनुसार इब्राहीम ने बैथल नामक नगर में याह्वे के नाम पर एक पूजा स्थल बनाया था । इसके पश्चात वह हैबरान गया । कही भी उसके मक्के जाने का वृतान्त नहीं मिलता ।

इस बात का भी प्रमाण है कि इब्राहीम एक मात्र भगवान का पुजारी नहीं था । वह तो बहुतों में से याह्वे और एल को मानता था । इसी एल को मक्के में अल्लाह कहा जाता था और शताब्दियों से काबें में उसकी पूजा होती थी । काबे का मान बढ़ाने के लिए मुहम्मद ने अपने जन्म स्थान मक्के को सर्वोत्तम स्थान की पदवी दी ।

1. कुरआन में लिखा है :

". (कह दो) , मुझ को यही इर्शाद हुआ है कि इस शहर मक्का के मालिक की इबादत करूं । (61) " (27 : 9)

यह अल्लाह और मक्के में विशेष सम्बन्ध जोड़ने का प्रयास है । अल्लाह पहले मक्के का स्वामी है और बाकी संसार का । अल्लाह तो मुहम्मद के जन्मस्थान मक्के में रहता है ।

2. कुरआन (14: 35–37) में इब्राहीम अल्लाह से प्रार्थना करता है कि वह मक्के की शांति को शान्ति और रक्षा का केन्द्र बनाए । वह काबे को भगवान का पावन स्थान कहता है ।

3. कुरआन (5 : 97) में अल्लाह काबे को सुरक्षित तीर्थस्थान नियुक्त करता है ।

कुरआन तो यह भी कहता है कि इब्राहीम न तो यहूदी था और नही ईसाई । वह तो मुसलमान था (3 : 67) । कुरान में एक और स्थान पर इस्लाम को इब्राहीम का दीन बताया है जिसने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था ।(21 : 78) अरब देश को महत्ता देने के लिए कुरआन (3 : 97) मुसलमानों को कम से कम एक बार मक्के जाने के लिए बाध्य करता है । इसको हज्ज कहते हैं जो इस्लाम के मूल सिद्धान्तों में से एक है और जिससे स्वर्ग प्राप्त होता है ।

उस समय मक्का तो केवल एक बड़ा गांव था फिर भी अरबी कुरआन में उसे नगरों की जननी कहा गया है । (42 : 7) किसी भी राष्ट्रवादी ने अपने देश के हित के लिए ऐसी उत्तम युक्ति नहीं निकाली । आजकल मक्के में कम से कम बीस लाख व्यक्ति प्रति वर्ष जाते हैं । इस से सऊदी अरब देश को 6 करोड़ वार्षिक आय होती है अर्थात हर परिवार के लिए 5000 पौंड । और फिर श्रद्धा तो देखिए । साल में एक बार नहीं, मास में एक बार नहीं वरन् दिन में पाँच बार करोड़ों व्यक्ति मक्के की ओर मुख करके अल्लाह से स्वर्ग की याचना करते हैं ।

मुहम्मद ने अपने देश और अपनी जाति को परम पावन घोषित किया । अपनी जाति का शासन स्थापित करने के लिए जिहाद का सिद्धान्त बनाया जिससे अरब दूसरों (जो भी मुसलमान नहो) से युद्ध करें, उनके देशों, सम्पत्ति अैश्र स्त्रियों को छीन लें और उन को अरबों के अधीन करें । जिहाद के सिद्धान्त को इस प्रकार चलाया गया ।

1. मुहम्मद ने यहूदियों से कहा : " यदि तुम मुसलमान बन जाओ तो तुम सुरक्षित रहोगे नहीं तो तुमको यह जानना चाहिए कि धरती अल्लाह और उसके पैगम्बर की है और मैं तुम्हें देश से निकाल देना चाहता हूँ । (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

2. संसार को अपने वश में करने के लिए सेना की आवश्यकता है, इसीलिए मुहम्मद ने कहा " स्वर्ग तो तलवारों की छाया में है " । (Sahih Al Bokhari Vol: 4)

3. कुरआन में मुहम्मद के अनुगामियों (मुसलमानों) को धर्मयोद्धा कहा है ।

खुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल खरीद लिए हैं (और इसके) बदलें उनके लिए बहिश्त (तैयार) की है । ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे जाते भी हैं । यह तौरात और इंजील और कुरआन में सच्चा वायदा है , जिसको पूरा करना उसे जरूर है और खुदा से ज्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है , तो जो सौदा तुम ने उससे किया है, उससे खुश रहो और यही सबसे बड़ी कामयाबी है । (9 : 111)

स्वर्ग में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं – विशेष कर सुन्दर स्त्रियों और लड़कों का । यदि मुसलमान विजयी हो तो दूसरों की सम्पत्ति और स्त्रियों को छीन कर उसे भूमि पर ही स्वर्ग मिल जाता है । और यदि वह जिहाद में मारा जाए तो सीधा स्वर्ग जाता है । दूसरों का अधिकार छीनने, हत्या और लूटमार का इससे बड़ा प्रलोभन और क्या हो सकता है ?

4. जिहाद दूसरों (मुसलमानों के अतिरिक्त) के विरुद्ध है इसीलिए मुहम्मद ने सब और मतों को झूठा कह कर जिहाद के अनगिनत अवसर बनाए ।

" और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा , वह उससे हरगिज नहीं कुबूल किया जाएगा " (3 : 85)

5. मुहम्मद ने दूसरे सभी मतों को झूठा कहा । जिस भी यहूदी या ईसाई ने मेरा नाम सुना है पर मुझे पैगम्बर नहीं माना नरक जाएगा । (Sahih Muslim Ch LXXI)

6. मुहम्मद ने कहा कि अल्लाह ने उसको आदेश दिया है कि जब तक सब दूसरे यह स्वीकार न कर लें कि " अल्लाह ही एक मात्र भगवान है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है " तब तक वह उनसे युद्ध करें । इसको माने बिना किसी के प्राण और सम्पत्ति सुरक्षित नहीं होगी । (Sahih Muslim Ch IX)

वास्तव में ये सभी युद्ध अरब राष्ट्र के हित के लिए थे और सभी युद्धों की भांति क्रूर थे । मुहम्मद ने स्वयं कहा था कि युद्ध कपट है और उसने इस को अपनाया । इन युद्धों के कारण मुहम्मद का अपने आप को ***<u>सब पर दयालु कहना</u>*** तो ढोंग है । अल बुखारी के आठवें भाग में कुछ उदाहरण हैं ।

1. मुहम्मद ने युरैना जाति के लोगों के हाथ और पांव काट दिए और उन्हें इस प्रकार मरने दिया ।

2. जब उक्त जाति वालों ने अपराध किए तो मुहम्मद ने उन्हें पकड़वाकर उनके हाथ और पांव कटवा दिए , उनकी आंखों को जलते लोहे से फुड़वा दिया । उनको पीने का पानी भी नहीं दिया गया जिससे वे प्यासे मर गए ।
3. जो भी मुहम्मद के विरोध में लड़े उनके अंग काट दिए गए जिस से वे मर गए । मुहम्मद का यह व्यवहार कुरआन पर आधारित है ।

अल्लाह और उसके पैगम्बर के विरुद्ध युद्ध लड़ने वालों का दण्ड मृत्यु, अंगों का काटना और देशनिकाला है । (5 : 33) स्पष्ट है कि इस्लाम दया का सन्देश नहीं वरन दूसरों की घृणा पर आधारित है ताकि मुसलमान सदा दूसरों से संघर्ष और युद्ध करते रहें । जैसे :
1. यदि तुम्हारे माता , पिता, सम्बन्धी या मित्र मुसलमान नहीं थे तो उनका शोक न करो, और उनकी कब्र के निकट भी न जाओ । (9 : 113)
2. मुसलमान को किसी और (जो मुसलमान नहीं) से मित्रता नहीं करनी चाहिए । (The Woman : 10)
3. मुसलमान का कर्तव्य है कि वे दूसरों के विरुद्ध जिहाद और क्रूरता करें । (The Forbidding : 5)
4. जहां भी कोई मूर्ति पूजक मिले उसकी हत्या करो ।
5. जहां भी मिले (जो मुसलमान नहीं) उसकी हत्या करो । उनमें से किसी की मित्रता सहायता न करो । (4 : 91)
6. अल्लाह ने मुहम्मद को प्ररित किया है कि वे दूसरों (जो मुसलमान नहीं) से क्रूरता का व्यवहार करें । वे मुहम्मद का सामना नहीं कर पाऐगें । (33 : 60 , 33 : 61)
7. अल्लाह ने दूसरों (जो मुसलमान नहीं) को श्राप दिया है और उनके लिए नकर की घोर अग्नि का आयोजन किया है । (33 : 64)

स्पष्ट है कि जैसे शताब्दियों पश्चात कार्ल मार्क्स ने सामाजिक संघर्ष (जिसमे जनता की विजय निश्चित थी) पर संसार का विधान रचने का सपना देखा उसी प्रकार मुहम्मद ने मत के आधार पर पर संघर्ष से अरबों का प्रभुत्व स्वीकार किया ।

कुरआन में कुछ स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीयता का उल्लेख है । मुसलमान इस का अर्थ नहीं समझते । मुहम्मद के जीवन काल में इस्लाम अरब देश तक ही सीमित था । कुरान में लोगों , आस्तिको, और निष्ठावालों की व्याख्या केवल अरबों पर लागू होती है ।

इस्लाम की अरब राष्ट्रीयता तो इससे स्पष्ट होती है कि कुरआन को अरबी कुरआन का नाम दिया गया है ताकि अरब इसके तात्पर्य को समझें ।

परिवारों से सम्प्रदाय, जातियाँ और राष्ट्र बनते हैं । वे सब एक देश में रहते हैं एक ही भाषा बोलते हैं और पूर्वजों के रीति रिवाजों का पालन करते हैं । इन में देश का विशेष महत्व है क्योंकि उनका मान देश की स्वतन्त्रता पर निर्भर है । इस में सब का हित निहित होता है जिस के कारण उन में संगठन होता है । मत और समाजवाद भी एकता के साधन हैं । यदि देश के नेता देश द्रोही या मतांध न हों तो राष्ट्र हित मतों से ऊपर उठ जाता है । उस समय अरब कई भागों में बंटे हुए थे जो अपने अपने भाग के हित को देखते थे जैसा कि कुछ वर्ष पूर्व ईरान की खाड़ी के युद्ध से स्पष्ट है ।

किसी देश का गौरव उसके वासियों के सदाचार से माना जाता है । किन्तु भारत के मुसलमान राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं करते । चाहे ही मुसलमानों का इस्लाम के आधार पर 1947 में पाकिस्तान बनवाया था , फिर भी 1971 में बहुत रक्त पात के बाद पाकिस्तान का पूर्व भाग अलग हो गया । बाकी के चार प्रान्त आपस में झगड़ते रहते हैं । राष्ट्रीयता का गौरव तो है ही नहीं ।

देश की श्रेष्ठता उसकी राजनैतिक या आर्थिक महत्ता से नहीं वरन् मानव सेवा से जानी जाती है । हर बलशाली राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि वह बलहीन राष्ट्र की सहायता करे । सभ्य राष्ट्र दूसरे देशों के नागरिकों को अपने देश में आने दे और आने वालों से समव्यवहार करे ।

मुहम्मद का राष्ट्रवाद इस्लाम पर आधारित था । हर मुसलमान को अरबों की भान्ति कुछ विशेष अधिकार थे परन्तु वह अरबों के अधीन था क्योंकि राज्य केवल अरबों का था विशेष कर कुरेशों का । मुहम्मद ने इस्लाम का आधार अपनी महत्ता पर रखा । मुहम्मद को माने बिना अल्लाह को मानना व्यर्थ है । ***सब देशों के मुसलमानों के लिए मुहम्मद को आदर्श व्यक्ति मनवाना अरबों की महत्ता के समान है ।***

याद रहे कि मुहम्मद अरब था और स्वभावतः दूसरे अरबों की भान्ति रहता था । पहले पहल उसका दूसरे अरबों से केवल मतभेद था । जब उसने सब अरबों से अपना मत मनवा लिया तब तो उन में कोई भेद नहीं रहा ।

इस्लाम में मुहम्मद की इच्छा के बिना कोई भी स्वर्ग नहीं जा सकता इसीलिए स्वर्ग जाने के लिए हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह मुहम्मद की भान्ति प्रार्थना करे, रोजे रखे, हज्ज जाए, उसकी भान्ति खाए, पिए, कपड़े पहने और सब कुछ मुहम्मद की भान्ति ही करे । जिन से मुहम्मद को प्रेम था उनसे प्रेम करे और जिनसे मुहम्मद को घृणा थी उनसे घृणा करे । सम्भवतः तुर्की को छोड़कर इसका दूसरे मुसलमानों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा । वे सब अपनी संस्कृति को त्याग कर अरब संस्कृति से प्रेम करने लगे हैं ।मुहम्मद दूसरों (जो मुसलमान नहीं) से घृणा करता था । इसीलिए सब देशों के मुसलमान अपने पूर्वजों (जो मुलसमान नहीं) से घृणा करते हैं, और अरब वीरों की सराहना । मुहम्मद के इस कथन से कि मुसलमान एक राष्ट्र हैं , और दूसरे सब दूसरा राष्ट्र, मुसलमानों की एकता तो बढ़ी पर अरब और दूसरे मुसलमानों का सम्बन्ध स्वामी और सेवक जैसा है । दूसरे सब देशों की मस्जिदों की भी मक्के और मदीने की मस्जिदों से कम प्रतिष्ठा है । अरबों की अधीनता से दूसरे देशों के मुसलमानों की अपने देशों के प्रति कोई निष्ठा नहीं । मुहम्मद के इस दैवी साम्राज्यवाद की इतिहास में तुलना नहीं मिलती । जो बीस पच्चीस देश अरबों ने युद्ध में जीते थे वे अब भी अरब देश कहलाते हैं। उन देशों के आदि वासियों का क्या हुआ ? उनको तो अपने अस्तितत्व से घृणा है और वे अरब कहलाना चाहते हैं ।

इस्लाम के नाम पर अरबों की महत्ता उन देशों पर भी लागू है जो अतीत में सभ्यता के आधार स्तम्भ थे । मिस्र जिसका 3000 साल तक बोलबाला था अपना अस्तित्व खोकर अरब बन गया है । बलशाली ईरानी जिनका इतिहास हजारों सालों का है जिन्होंने रोमनों को बार बार पछाड़ा था और जिनके पैगम्बर **जारातुशत्र** और **मानी** जैसे महान थे अब अरबों के परिचारक बन कर हीन हो गए हैं । एक और उदाहरण हिन्दुस्थान का है । इस देश के संसार की सभ्यता को देन सबसे अधिक हैं । इस देश ने इस्पात सूती कपड़े आदि के आविष्कारों से संसार की सभ्यता को बढ़ावा दिया । इसकी धर्म परम्परा से संसार भर ने सीख ली । मुसलमानों ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण से पहले यह न केवल एक स्वतंत्र देश था वरन संसार में सबसे अधिक सम्पत्ति शाली देश और विज्ञान और उद्योग में सर्वोच्च देश था । मुसलमानों के आक्रमण के बाद यह देश अपनी महत्ता खो बैठा है । यद्यपि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में लगभग 40 करोड़ मुसलमान हैं **फिर भी उन्हें अपनी मातृभूमि पर तनिक भी गर्व नहीं है और वे अपने देश में भी पराए हैं ।** और जब तक उन्हें इस बात का आभास नहीं होता कि वे अरब देशों के नहीं अपने देशों के वासी हैं वे इसी प्रकार भटकते रहेंगे ।

इस्लाम ने मिस्र , ईरान और हिन्दुस्तान जैसे महान देशों का नाश कर दिया है । जापान, चीन, कोरिया, टैवान, आदि जिन पर मुसलमानों का कभी राज नहीं हुआ समृद्ध देश हैं । इन राष्ट्रों के वासी धरती पर स्वर्ग में रहते हैं । इसके विपरीत मुसलमान देशों के वासी स्वर्ग के सपने ही देखते हैं और अधिक कट्टर बनते जा रहे है। मुसलमानों के कट्टर पंथियों के चढ़ाव का वास्तविक कारण यही है – इस्लाम के आदेशों पर चलना नहीं (जो आधुनिक काल में कदापि सम्भव नहीं ।) वे बिना समझे ही इस्लामी राज्य की मांग करते हैं ।

मुसलमान कहते हैं कि इस्लाम जीवन का पूरा विधान है । यह सरासर झूठ है । इसीलिए संसार भर में कभी इस्लामी राज्य नहीं बना । यह तो इस्लाम के नाम पर जनता को मूर्ख बनाने का सत्ता चाहने वालों का नारा है । कुछ पचास साल पूर्व एक इस्लामिक राज्य स्थापित करने के

नाम पर हिन्दुस्तान का बंटवारा किया गया था । अभी तक न तो इस्लामिक राज्य बना है और न ही बनने की कोई आशा है और न ही किसी को पता है कि इस्लामिक राज्य क्या होता है । यह तो सत्ता चाहने वालों का इस्लाम के नाम पर अपना उल्लू सीधा करना था ।

क्योंकि मुसलमान दिन प्रति दिन और कट्टर बनते जा रहे हैं यह आवश्यक है कि इस्लाम के मुख्य सिद्धान्तों की (जो आजकल निर्रथक हैं) व्याख्या की जाए ।

1. इस्लाम का पहला सिद्धान्त यह है कि राज्य भगवान का है । यह झूठ है । राज्य जनता का है । मनुष्य अपनी इच्छा से कर्म तभी कर सकता है यदि वह स्वतंत्र हो । यह तभी सम्भव है यदि राज्य जनता का हो ।

2. मुसलमान कहते हैं कि (क) इस्लामी राज्य विशेष प्रकार का है । (ख) यह राज्य प्रजातंत्र है ।

इन दोनों कथनों का कोई आधार नहीं । जब मुहम्मद का देहान्त हुआ तो उसके उत्तराधिकार की समस्या बहुत गम्भीर बनी । यद्यपि शैया मुसलमान कहते हैं कि मुहम्मद ने अपना उत्तराधिकारी अली को नियुक्त किया था, मुहम्मद ने इस विषय पर कोई आदेश नहीं दिए थे । ऐसी विशेष बात के विषय में कोई निश्चय नहोन का अर्थ है कि इस्लामी राज्य पद्धति नाम की कोई वस्तु है ही नहीं । ईरान से लिए हुए कुछ विधानों को तो इस्लामी राज प़द्धति नहीं कहा जा सकता ।

दूसरे, इस्लामी राज्य प्रजातंत्र नहीं क्योंकि राजा तो केवल कुरेश ही हो सकता है । पहले चार राजाओं में से अबुबक्र को चाल से चुनवाया गया । ओमर को अबुबक्र ने नियुक्त किया । ओमर अब्दुर्रहमान को नामजद करना चाहता था । जब वह नहीं माना तो छः व्यक्तियों की समिति ने उसमान को चुना । इसको प्रजातंत्र तो नहीं कहा जा सकता । उसमान की हत्या पर उसके सम्प्रदाय ने अली को खलीफा बनाया । इसके पश्चात खिलाफत राजवंशीय अर्थात् जन्म से ही हुई ।

पहले चार खलीफों के समय को इस्लाम का श्रेष्ठ समय माना जाता है ।सत्य यह है कि मुहम्मद की मृत्यु के बाद 90 प्रतिशत अरबों ने जकात देने से इंकार किया और और उन्होंने मदीने पर चढ़ाई भी की । अबुबक्र ने उनको परास्त किया नहीं तो इस्लाम का तभी अंत हो जाता । पहले चार खलीफाओं में तीन का अन्त हत्या से हुआ ।

यह समय श्रेष्ठ तो केवल अरबों के लिए था इस समय उन्होंने अल्लाह के नाम पर दूसरे देशों को लूटा और उनकी बहू बेटियों को उठा कर ले आए । लूट मार सहने का दुर्भाग्य सब से पहले मिस्र और ईरान को प्राप्त हुआ ।

3. मुसलमान कहते हैं कि इस्लाम समाजवादी है । यह सरासर झूठ है । इस्लाम तो यह कहता है कि अल्लाह जिसे चाहे राजा बनाता है और जिन्हें चाहे उन्हें सम्पत्ति देता है चाहे वे इसके योग्य हों या न हों । इसका अर्थ तो यह हुआ कि इस्लाम प्रजातंत्र और समाजवाद दोनों के प्रतिकूल है ।

4. इस्लाम का कोई आर्थिक सिद्धान्त नहीं । इस्लाम में ब्याज लेने या ब्याज देने की मनाही है परन्तु ब्याज के बिना कोई धन्धा नहीं हो सकता । सब मुसलमान नेता और देश ब्याज लेते हैं ।

5. मुसलमानों ने जो विधान 1400 वर्ष पूर्व बनाए थे ते आजकल के संसार में उचित नहीं हैं । यद्यपि हिजाब (पर्दा) कुरआन के अनुसार बाध्य है फिर भी इसका पूरा पालन तो अधिकतर मुसलमान देशों में भी नहीं होता । यही व्यवस्था तलाक आदि सिद्धान्तों की है ।

6. मुसलमानों में दूसरों से घृणा करने का सिद्धान्त इस्लाम को मानव अधिकारों के विपरीत सिद्ध करता है । इसी कारण मुसलमान देशों में दूसरे मतों के व्यक्ति बहुत कम हैं ।

मुहम्मद ने अपने अनुगामियों को सब दूसरों (जो मुसलमान नहीं थे) को देश से निकालने का आदेश दिया था और यहूदियों को तो उसने स्वयम् निकाला था । यदि कोई मुसलमान किसी दूसरे की हत्या भी करे तो इस्लाम में यह अपराध नहीं । इस्लाम की उद्दण्डता देखिए कि हिन्दुओं के परम पावन स्थान काशी में मस्जिद बना रखी है पर किसी को भी मक्का में गिरजा, यहूदी

उपासनागृह या मन्दिर बनाने नहीं देते । क्योंकि मुसलमानों को दूसरों से मेल मिलाप करना निषिद्ध है । मुसलमान देशों की युनाइटेड नेशन्स की सदस्यता इस्लाम के अनुसार निषिद्ध है । यह अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे का कैसा नमूना है ?

तीसरा अध्याय

मुस्लिम संस्कृति

मुस्लिम संस्कृति का आधार दूसरो के प्रति घृणा है । मुसलमान देशों में दूसरों से जिजिया (विशेष कर) लेकर भेदभाव किया जाता है ।

इस्लामिक संस्कृति अरब साम्राज्यवाद का विस्तार है । मुसलमान चाहे जहां पर रहता हो अपने आप को हिन्दुस्तानी , पाकिस्तानी, या ईरानी आदि न कहकर अरब संस्कृति वाला मुसलमान ही कहता है । इस्लाम के नाम पर जो नहीं करना चाहिए करता है और यह भी मानता है कि मुसलमान होने के नाते दूसरों पर राज करने का उसका जन्मसिद्ध अधिकार है । इसी धारणा के कारण इस्लाम सब दूसरों के लिए आतंकवादी मत है ।

मुसलमानों के लिए दूसरों के साथ मेलजोल निषिद्ध है चाहे वे उनके बन्धु ही क्यों न हों ।

स्वेच्छाचारी शासकता की संस्कृति होने के कारण इस्लाम जनतंत्र और समानता का शत्रु है क्योंकि राज्य अल्लाह का है और सब के लिए आवश्यक है कि वे अल्लाह और मुहम्मद के बनाए नियमों का बिना सोचें पालन करें । ऐसी संस्कृति अत्याचार ही फैलाती है ।

अल्लाह के नाम पर लूटमार, अत्याचार , स्त्रियों का अपहरण इस्लाम की विशेषता है –– वही अल्लाह जिसे मुसलमान सर्वशक्तिमान कहते हैं पर जिसे अपनी महानता के लिए मनुष्यों को आवश्यकता है । वह अपने आपको परम दयालु कहता है पर जो भी मुसलमान नहीं उनकी लूटमार, हत्या, उनकी स्त्रियों का अपहरण और उनके बलात्कार को प्रोत्साहन दे कर धर्म युद्ध कहते हैं । महान देशों का आधार तो सदाचार पर है परन्तु राष्ट्रीयता के अभाव के कारण हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश के मुसलमानों को सदाचार का ज्ञान ही नहीं ।

मुसलमान देशों की आर्थिक दुर्व्यवस्था ने मुसलमानों को और भी कट्टर बना दिया है । उनके स्वार्थी नेता यह कह कर कि मुहम्मद उन्हें स्वर्ग दिलवाएगा उनकी बुद्धि पर अपना नियंत्रण रखते हे। मुसलमानों की यह विचार धारा मानव जाति के लिए बहुत संकट भरी है ।

जो मुसलमान मुहम्मद को सबसे बड़ा पैगम्बर मानते हैं (अल्लाह से भी बढ़कर) उन्हें मेंरे विचारों से अवश्य आपत्ति होगी । परन्तु पैगम्बरी धारणा ही विवेक के विरुद्ध है ।

इस्लाम के अनुसार अल्लाह सृष्टि का सर्जनहार, सर्वशक्तिामन, पूर्ण और स्वतंत्र है । परन्तु कुरआन कहता है कि अल्लाह को प्रशंसा और पूजा करवाने की बहुत चाह है । इसीलिए वह उनको जो उसकी पूजा व प्रशंसा नही करते अत्यन्त यातना देने का डर दिखाता है और अपनी पूजा और प्रशंसा करवाने के लिए स्वर्ग में सुंदर कन्याओं और सुन्दर लड़कों का प्रलोभन भी देता है । ऐसा अल्लाह जिसको आनन्द के लिए मनुष्यों की स्वीकृति चाहिए भगवान नहीं हो सकता । फिर पैगम्बर के बिना तो अल्लाह का कोई अस्तित्व है ही नहीं । ऐसा अल्लाह स्वतंत्र मर्जनहार और पूर्ण भगवान तो हो ही नहीं सकता । पैगम्बरी में विश्वास करने वाले इस कठिन समस्या का समाधान पैगम्बर को भगवान का अवतार मान कर करते हैं जैंसे ईसाई ईसा को पुत्र भगवान या भगवान मानते है। इसी प्रकार अधिकतर मुसलमान मुहम्मद को भगवान का चहेता, सृष्टि का कारण या केवल भगवान समझते हैं । किन्तु पैगम्बर साधारण आदमियों की तरह जन्म लेता है, खाता है, पीता है, मल मूत्र करता है, पिता बनता है, बीमार होता है, बूढ़ा होता है, और फिर मर जाता है । फिर वह दिव्य कैसे है ? ***मुहम्मद दिव्य नहीं था । वह तो ऐक सम्पन्न नेता था जिसने अरब साम्राज्यवाद की स्थापना की । यही उसकी सब से बड़ी सफलता थी ।***

मुहम्मद अनाथ था जिसको उसके चाचा और दादा ने पाला था । किन्तु वह कुरेशी था और मक्के के काबे के स्वामी होने के नाते कुरेशों का बोल बाला था । उनको अल्लाह के लोग कहा जाता था । फिर उसने एक सम्पत्ति वाली खादिजा से विवाह कर लिया था जिसने तन मन धन से मुहम्मद के सहायता की । वह पहली थी जिसने मुहम्मद का मत स्वीकार किया । दूसरा

जिसने इस्लाम अपनाया मुहम्मद का गोद लिया बन्धु अली था । इस के पश्चात अबुबक्र था जो कि मुहम्मद का पुराना धनवान मित्र था । मुहम्मद को अपनी महत्वाकांक्षा को समथ्र बनाने के लिए सभी पर्याप्त साधन थे ।

जब मुहम्मद के कथन अनुसार अल्लाह ने उसे इस्लाम फैलाने का आदेश दिया तो भी तीन साल ती उसने कोई मत प्रचार नहीं किया । आश्चर्य इस बात का है कि यदि मुहम्मद आदम से भी पहले पैगम्बर था तो उसने 40 साल की आयु तक अल्लाह का प्रचार क्यों नही किया । क्या वह अपने कर्तव्य पालन में विमुख था या उसको अपने पैगम्बर होने का ज्ञान नहीं था ।

पैगम्बर पन से पैगम्बर की प्रतिष्ठा तो बढ़ती है परन्तु भगवान की प्रतिष्ठा घट जाती है क्योंकि भगवान अपनी इच्छा मनवाने के लिए पैगम्बर पर निर्भर हो जाता है । अल्लाह को अपनी प्रशंसा और पूजा करवाने की बहुत इच्छा है । इसके लिए अल्लाह को मनुष्य की आवश्यकता है अतः पैगम्बर मुहम्मद से भी श्रेष्ठ बन जाता है । इस्लाम में यह स्पष्ट है । मुसलमान मुहम्मद की अल्लाह से भी अधिक प्रतिष्ठा करते हैं क्योंकि वह मानते हैं कि मुहम्मद किसी को भी स्वर्ग दिलवा सकता है । परन्तु मुहम्मद की अनुमति के बिना अल्लाह यह नही कर सकता ।

पैगम्बर अल्लाह और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ बन जाता है । सभी अच्छाइयों का श्रेय लेता है । यही परिस्थिति बिगड़ जाए तो उसका दोषी अल्लाह को ठहराता है क्योंकि अल्लाह की इच्छा का पालन तो अनिवार्य है । अल्लाह को सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापाक कहकर उसके नाम लोगों से कुछ भी करवाता है । और फिर पैगम्बर का मान तो इतना बढ़ जाता है कि उस के कथन को भगवान का कथन माना जाता है ।

पैगम्बर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है । चाहे वह अपने को भगवान का सेवक की वह वास्तव में भगवान माना जाता है । भगवान तो नाममात्र के लिए होता है उसे तो केवल पैगम्बर के द्वारा ही पाया जा सकता है । यही कारण है कि कुरआन में अल्लाह और मुहम्मद में कोई भेद नहीं है । वे इकट्ठे ही हर बात का निर्णय करते हैं । कुरआन के अनुसार कियामत पर मुहम्मद अल्लाह के दायें बैठेगा । अल्लाह तो पूर्ण नहीं और के वल अल्लाह को मानने से कोई मुसलमान नहीं बन सकता । उसके साथ मुहम्मद को मानना अनिवार्य है ।

बिना भगवान के पैगम्बर तो नहीं बना जा सकता है । इलहाम शामी प्रथा है । इसीलिए सब शामी सम्प्रदायों का अपना अपना भगवान होता था । राज तो राजा लोग करते थे परन्तु विधान को भगवान के नाम से लागू करते थे । इससे सजे ढोंग रचाते थे कि वे तो भगवान से दिए कर्तव्य का पालन करते हैं । दूसरे, भगवान मानने वालों में एकता और राष्ट्रीयता बढ़ जाती है । जैसे आधुनिक काल में मातृभूमि राष्ट्रीयता का साधन था । याहवे के बिना देश देश में बिखरे हुए यहूदी अपनी राष्ट्रीयता की कभी भी जीवित नहीं रख सकते ।

मुहम्मद एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहता था इसके लिए आवश्यक था कि वह अरबों का संगठन करे । उस समय अरब अनेक सम्प्रदायों में बंटे हुए थे जिसके कारण काबे में अनेक दिव्य बुतों की पूजा होती थी जो विदेशी संस्कृति के थे जैसे कि यूनानी, रोमन, ईरानी और हिन्दुस्तानी । सब सम्प्रदायों के अपने अपने भगवान थे ।

इसीलिए मुहम्मद को एक राष्ट्रीय भगवान की आवश्यकता थी । मुहम्मद को इसके पूर्वादाहरण का भी ज्ञान था कि कैसे मूसार ने लगभग 2000 साल पूर्व इस्राइली राष्ट्र स्थापित किया था । मुहम्मद को तौरात (मूसा के लिखे हुए इंजील के पांच अध्याय के) विषय में भी जानकारी थी । नौफाल का पुत्र वरका जिसने मुहम्मद के बारे में लिखा है मुहम्मद की पत्नि खादिजा का बन्धु एक विद्वान यहूदी था ।

मुहम्मद ने सब कुछ मूसा की भांति किया । मूसा के समय यहूदियों की दशा अत्यन्त करुणाजनक थी । मिस्र के सम्राटों का आदेश था कि यहूदियों की संख्या कम करने के लिए हर यहूदी लड़के को जन्म पर ही मार दिया जाए । मूसा ने यहूदियों को मिस्र से मुक्ति दिलाई । यद्यपि मूसा एक योग्य योद्धा और सेनापति था फिर भी यह योग्यता एक राष्ट्र बनाने के लिए पर्याप्त नहीं थी । मिस्र का सम्राट मिस्रियों पर भगवान के प्रतिनिधि के रूप में राज करता था ।

इस कारण मूसा के लिए यह आवश्यक था कि वह भी दिव्य रूप प्राप्त करे ताकि वह यहूदियों को अलौकिक समर्थन का आश्वासन दे सके ।

कहते हैं कि एक समय घूमते हुए मूसा ने एक झाड़ी को देखा जो जल तो रही थी पर भस्म नहीं होती थी । उसने आकाशवाणी सुनी । आकाशवाणी भगवान की थी –– इब्राहीम, इस्हाक और याकूब के भगवान की । आकाशवाणी ने मूसा को आदेश दिया कि वह यहूदियों को मिस्र से मुक्ति दिलाए । इस प्रकार मूसा यहूदियों का समर्थक बन गया । यहूदियों की मुक्ति ने उनके भगवान याह्वे के सामर्थ्य का प्रमाण दिया जिसने मूसा को मिस्र के सम्राट पर विजयी किया । इस प्रकार यहूदियों को विश्वास हो गया कि याह्वे सर्वशक्तिमान है और सारी सृष्टि का स्वामी है ।

पूर्व काल में सभी लोग मूर्ति की पूजा करते थे । मूसा ने पूजा के एक नए ढंग का आविष्कार किया । उसने कहा कि याह्वे निराकार है । इसीलिए उसकी मूर्ति नहीं बनाई जा सकती । उसने मूर्ति पूजा का निषेध किया । उसने याह्वे को ईर्ष्यालू और बदला लेने वाल भगवान का रूप देकर सब यहूदियों को डर से एकमात्र याह्वे का पूजक बनाया । याह्वे की सर्वश्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए सिनाई पर्वत के चमत्कार का वर्णन किया ।

तौरात को सब यहूदियों पर लागू करने के लिए मूसा ने याह्वे से यहूदियों के समझौते का सहारा लिया जो मूसा के कथन के अनुसार मूसा ने याह्वे से सिनाई पर्वत पर किया था । इसके अनुसार मूसा उसी प्रकार याह्वे का पैगम्बर था जिस प्रकार मूसा से पहले इब्राहीम, नूह, याकूब आदि सब याह्वे के पैगम्बर थे और जिनका कर्तव्य जनता से याह्वे की आज्ञा पालन करवाना था ।

इस्लाम को इब्राहीम का मत घोषित करने से मुहम्मद यहूदियों की सभी प्रथाओं को अपनाने में असफल हो गया । वह यहूदियों को अपने साथ मिलाना चाहता था जब उसने देखा कि यहूदी अपने मत के पक्के हैं तो उसने एक मात्र अरब राष्ट्र बनाने का निर्णय किया । इसके लिए यहूदियों की प्रथा के अनुसारः

1. उसने अरबों को एकमात्र भगवान बनाना चाहा जिसकी सब अरब पूजा करें ।
2. वह पैगम्बर बनना चाहता था जो जनता और भगवान के बीच एकमात्र मध्यस्थ हो ।
3. उसकी इच्छा थी कि जिस प्रकार यहूदियों का धर्मग्रंथ तौरात है उसी प्रकार अरबों का अरबी में धर्मग्रंथ हो ।
4. अरबों का पृथक राष्ट्र बनाने के लिए वह अरबों को आश्वासन देना चाहता था कि भगवान का समझौता इब्राहीम और इस्माइल से था न कि इब्राहीम और इस्हाक से जैसा कि यहूदी मानते हैं । (इस्माईल अरबों का पूर्वज था और इस्हाक यहूदियों का पूर्वज था ।) यह अरब राष्ट्र वाद के लिए आवश्यक था।
5. अरब संस्कृति को इस्लाम का भाग बना कर उसे दूसरे मुसलमानों की संस्कृति से उच्चतर पदवी दी जाए ।
6. इस्लाम की अन्ताराष्ट्रीयता केवल ऐसी हो जो अरबों को पसन्द हो ।
7. मूसा की भान्ति मुहम्मद ने भी अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए युद्ध को साधन बनाया ।

अरबों को युद्ध पर तत्पर करने के लिए उसने लूटमार को पुण्य बताया जिससे मुसलमानों को स्वर्ग मिलेगा जिसमें वासना पूर्ति के लिए अनेक कन्याएं और सुकुमार मिलेंगे । मुहम्मद ने दूसरे देशों के लूट को जिहाद का नाम दिया जिससे मुसलमान जीवन में सब सम्पत्ति और मृत्यु पश्चात स्वर्ग पाएंगें ।

उपरलिखित कथन बिल्कुल सत्य है । यह सब अरब राष्ट्रीयता के लिए था । मुहम्मद ने इस्लाम अपने प्रभुत्व पर चलाया और जनसमुदायों को इस प्रकार बांटा ।

क– मुहम्मद सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है ।
ख– उसका वंश बानू हाशिम वंशों में सर्वश्रेष्ठ है ।
ग– उसका सम्प्रदाय कुरेश सम्प्रदायों में सर्वश्रेष्ठ है ।

मैंने इन के सर्मथन में पहले ही हदीस से प्रमाण दिए हैं । क्योंकि मुहम्मद के अनुसार कुरेश अरबों में सर्वश्रेष्ठ थे अरब सबसे श्रेष्ठ हुए । क्योंकि राज करने का अधिकार केवल कुरेशों को था (जो अरब थे) इस लिए अल्लाह की इच्छा से सारे संसार का भाग्य अरबों के हाथ में था ।

1. मुहम्मद ने अल्लाह को इस्लाम का भगवान क्यों चुना ?

अल्लाह कुरेशों का भगवान था जिसकी मूर्ति की पूजा काबे में की जाती थी । काबे पर कुरेशों का अधिकार था अर्थात् अल्लाह मुहम्मद के सम्प्रदाय का भगवान था ।

अल्लाह के एक मात्र होने को सिद्ध करने के लिए मुहम्मद ने दूसरी सब मूर्तियों का खण्डन तो किया ही पर अल्लाह की मूर्ति को भी तोड़ा। अल्लाह को निराकार और सर्वशक्तिमान बना कर मुहम्मद अल्लाह की भान्ति दिव्य बन गया क्योंकि अल्लाह केवल मुहम्मद से ही वार्तालाप करता था । कुरआन में स्पष्ट लिखा है :

और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक नहीं है कि जब खुदा और उसका रसूल कोई अग्र मुकर्रर कर दे, तो वे इस काम में अपना भी कुछ अख्तियार समझें और जो कोई खुदा और उसके रसूल की ना फरमानी करे वह खुला गुमराह हो गया । (33 : 36)

स्पष्ट है कि अल्लाह और मुहम्मद में कोई अन्तर नहीं क्योंकि उनके सभी निर्णय सांझे है। और एक की आज्ञा न मानना दूसरे की आज्ञा न मानने के बराबर है ।

यहूदियों के समान अरबों को भी संगठन के लिए अपने एक मात्र भगवान की आवश्यकता थी । मुहम्मद ने केवल यह ही नहीं किया । याह्वे तो केवल यहूदियों का भगवान था । मुहम्मद ने अल्लाह को सारी सृष्टि का भगवान बना कर अरब संस्थाओं और संस्कृति को ऊंची और पावन पदवी दी । परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों को अरब संस्कृति औश्र अरब संस्थाओं (जिनमें काबा भी था ।) को उच्च मानना पड़ा ।

इसकी विशेषता एक उदाहरण से स्पष्ट होगी । जीअन एक नगर को दाउद ने आज से 3000 साल पहल जैबुजीटो से जीता था । यह नगर उस टीले पर था जिसपर उपरान्त काल में जेरुसलम बना । इंजील के पहले भाग में जीअन का उल्लेख 152 बार आया है जिससे अब जीअन को ही जेरुसलम माना जाता है । यद्यपि अब जेरुसलम को पावन माना जाता है फिर भी यहूदी जीअन को अधिक महत्व देते है । इसका कारण यह है कि याह्वे जीअन में रहता है (Isa 24 : 32) और याह्वे ने जीअन में ही दाऊद को राज्य दिया था । (Ps 2 : 6) । यद्यपि बैबिलोनियों ने लगभग 2500 वर्ष पूर्व जैरुसलम को नष्ट कर दिया था फिर भी यहूदी कभी भी जीअन को नहीं भूले । इस प्रकार जीअन यहूदियों के राष्ट्र का चिन्ह बन गया । इसी कारण यहूदी अपना राष्ट्र केवल फिलीस्तीन में ही बनाना चाहते थे ।

प्रायः सभी यहूदी एक ही वंशावली के हैं । वे लोग जिन्हों ने यहूदी मत को बाद में अपनाया बहुत थोड़े हैं परन्तु वे भी जेरुसलम की पावनता के कारण उसको अपनी मातृभूमि से श्रेष्ठ मानते हैं ।

अब मुहम्मद की राष्ट्रीयता सहज ही समझी जा सकती है । मक्के के एक छोटे से धर्मस्थान काबे का अरबों में उतना ही महत्व था जितना यहूदियों में जेरुसलम का था । सारे अरब में लोग काबे की यात्रा करने आते थे । क्योंकि काबे पर कुरेशों का अधिकार था इसीलिए अल्लाह को (जिसकी मूर्ति की काबे में पूजा की जाती थी) काबे का स्वामी कहा जाता था । मुहम्मद ने काबे को इस्लाम का परम पावन तीर्थ स्थान बनाया। पहले तो उसने मक्के को महान नगर का नाम दिया यद्यपि मक्का केवल एक बड़े गांव के समान था फिर उसे यह कह कर परम पावन पदवी दी :

" और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊंची कर रहे थे
.... (2 : 127)

यहूदियों के पूर्वज इब्राहीम (जिसको भगवान ने निपुण बनाया था) की हंजील में बहुत प्रशंसा की गयी है । यह कह कर कि काबे की स्थापना इब्राहीम और मुहम्मद के पूर्वज इस्माईल ने की थी मुहम्मद ने काबे को एक दिव्य राष्ट्रीय स्थान की पदवी दी ।

कुरआन के अनुसार काबा परम पावन मस्जिद है और कुरान में मुसलमानों को आदेश है कि वे काबे की ओर मुख करके अल्लाह का पूजन करें । इसीलिए संसार के लगभग 100 करोड़ मुसलमान दिन में पांच पांच बार काबे को प्रणाम करते हैं ।

कुरआन में यह भी लिखा है :

" पहले घर जो लोगों (के इबादत करने) के लिए मुकर्रर किया गया था , वही है जो मक्के में है, बरकल वाला और दुनिया के लिए हिदायत । और लोगों पर खुदा का हक (यानी फर्ज है) कि जो इस घर तक जाने की कुदरत रखे, वह इसका हज करे । (3 : 96 , 3 : 97)

हर मुसलमान का यह कर्तव्य है कि यदि उसका सामर्थ्य हो तो वह मक्के अवश्य जाए । यदि वह मक्के का हज्ज नहीं करेगा तो नरक जाएगा और यदि वह मक्के का हज्ज करेगा तो अवश्य ही स्वर्ग जा कर सुन्दर सुकुमारियों का भोग करेगा चाहे वह चोर , डाकू , हत्यारा और बलात्कारी ही क्यों नहो ।

इसी काबे और स्वर्ग के सम्बन्ध के कारण हिन्दुस्तान, पाकिस्तान , बंग्लादेश इत्यादि देशों के मुसलमान अपनी मातृभूमि का अस्तित्व भुलाकर अपने आप को केवल मुलसमान कहते हैं । वे यह भूल जाते हैं कि अरब राष्ट्रीयता के कारण वे अपने देशों की धरोहर का परित्याग करते हैं । यह बुद्धि नियन्त्रण की चरम सीमा है ।

काबा मक्के की बड़ी मस्जिद के भीतर एक छोटा सा धर्मस्थान है । हाजी काबे की 7 बार परिक्रमा करते है और उसमें रखे हुए एक काले पत्थर को चूमते हैं ।मुसलमान मानते हैं कि यह काला पत्थर भगवान ने आदम को स्वर्ग से निकलते समय दिया था । **यह ऐतिहासिक सत्य है कि अपना मत चलाने के आरम्भ में मुहम्मद ने काबे को कोई महत्ता नहीं दी थी । यह तो तभी हुआ जब यहूदी उसके अनुगामी नहीं बने । तब मुहम्मद ने जेरुसलम से हटा कर काबे को इस्लाम का किबला (सर्वश्रेष्ठ स्थान) घोषित किया ।**

काबे जाने की और काले पत्थर को चूमने की प्रथा इस्लाम से पहले की है जिस समय को कुरआन में अज्ञान का समय कहा गया है । इस अज्ञान के समय की प्रथाओं को इस्लाम में रखने से मुहम्मद की राष्ट्रीयता और इस्लाम के वास्तविक तात्पर्य का पता चलता है ।

जन्म भर और मृत्यु के पश्चात भी हर मुसलमान काबे का सम्मान करता है । जीवन भर वह काबे की ओर मुख कर के नमाज पढ़ता है और मृत्यु के पश्चात उस के शब को काबे की ओर मुख करके गाढ़ा जाता है । मुहम्मद ने कैसे अपने जन्म स्थान मक्के को दूसरे देशों के मुसलमानों के लिए उनकी मातृभूमि से ऊंची पदवी दी है ?

आरम्भ में मुसलमानों का किबला (सर्वश्रेष्ठ स्थान) जेरुसलम था । काबे को यह पदवी किस ने दी ? कुरआन में लिखा है कि :

(ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हारा आसमान की तरफ मुंह फेर फेर कर देखना देख रहे हैं । सो हम तुमको उसी किब्ले की तरफ, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुंह करने का हुक्त देंगे । तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी खाना ए काबा) की तरफ कर लो । और तुम लोग जहां हुआ करो (नमाज पढ़ने के वक्त) उसी मस्जिद की तरफ मुंह कर लिया करो । (2 : 144)

और तुम जहां से निकलो (नमाज में) अपना मुंह मस्जिदे मोहतरम की तरफ कर लिया करो । बेशुबहा वह तुम्हारे हरबरदिगान की तरफ से हक है । और तुम लोग जो कुछ करते हो ,खुदा उससे बेखबर नहीं ।(2 : 149)

उपरोक्त आयतों से यह ज्ञान होता है कि अल्लाह ने काबे को सर्वश्रेष्ठ धर्मस्थान मुहम्मद को प्रसन्न करने के लिए बनाया था अर्थात् अल्लाह का अपना कोई भी संकल्प नहीं । मत का सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाना तो भगवान के हाथ होना चाहिए । **इसमें पैगम्बर (जो मनुष्य है) का हाथ नहीं होना चाहिए यदि ऐसा हो तो पैगम्बर अपने आप को अल्लाह के रूप में प्रस्तुत करता है**

जो कुछ मैने पहले लिखा है उससे स्पष्ट है कि अल्लाह काबे में स्थित एक मूर्ति का नाम था उसमें प्राण तो मुहम्मद ने डाले थे । इसीलिए अल्लाह ने मुहम्मद का निर्माण नहीं किया था वरन् मुहम्मद ने अल्लाह का निर्माण किया था । इसीलिए अल्लाह को मुहम्मद की हर इच्छा का पालन करना पड़ता है ।

जिस प्रकार याह्वे ने जेरुसलम को यहूदियों का सर्वश्रेष्ठ स्थान बना कर उसे संसार में उच्च स्थान प्रदान किया उसी प्रकार काबे को मुसलमाने को श्रेष्ठ स्थान बनाकर संसार के मुसलमानों में अरबों की महत्ता स्थापित की गयी ।

मुहम्मद जानता था कि यहूदियों का कट्टर राष्ट्रवाद उन के धर्मग्रन्थ तौरात के आधार पर था । यहूदी मूसा की लिखी हुई तौरात को दिव्य ग्रंथ मानते हैं और यह ही यहूदियों की राष्ट्रीयता का एक मूल सिद्धान्त है ।

अरबों को भी तो यहूदियों की भान्ति एक दिव्य ग्रथं की आवश्यकता थी जिससे उनमें संगठन हो । कुरआन यह ग्रथ था । मुहम्मद के अनुसार कुरआन में कुछ भी नई बात नही थी । यह तो वही संदेश था जो अल्लाह ने आदम को दिया था ।और जिस संदेश को आदम ने अपनी संतति को दिया था। कुरआन में लिखा हैः

" खुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के खानदान और इमरानन के खानदान को दुनिया के लोगों में चुन लिया था । " (3 : 33)

" सबको हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और युसुफ और मूसा और हारून को भी हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं । (6 : 84)

स्पष्ट है कि यह परम्परा थी कि अल्लाह समय समय पर अपने पैगम्बरों (आदम, नूह, युसुफ , मूसा इत्यादि) द्वारा पथप्रर्दशन करता था । यह पथ प्रदर्शन धर्म ग्रंथ द्वारा किया जाता था (जैसे कि इंजील द्वारा) । किन्तु मुहम्मद ने घोषित किया कि अल्लाह ने इसपरम्परा को समाप्त कर दिया है और मुहम्मद को अंतिम पैगम्बर बनाया है (33 : 40) । यदि अल्लाह आदिकाल से अब तक प्रदर्शन करता आया है तो उसे भविष्य में भी अन्त काल तक पथप्रर्दशन करना चाहिए ।

मुहम्मद ने कहा कि दूसरे धर्मग्रन्थ (तौरात और इंजील) लोगों का पथ प्रर्दशन नहीं कर सकते क्योंकि यहूदियों और इसाईयों ने उन्हें भ्रष्ट कर दिया था । यह तो केवल कुरआन की कर सकता था क्योंकि अल्लाह ने स्वयं कुरआन के सत्य होने का आश्वासन दिया है और उसे कभी भी भ्रष्ट नहीं होन देगा । आश्चर्य है कि अल्लाह ने अपने पहले धर्मग्रन्थों की रक्षा तो नहीं की पर कुरआन की रक्षा का दायित्व ले लिया ।

इसका केवल एक ही कारण है । मुहम्मद कुरआन को अरबों की राष्ट्रीयता का साधन बनाना चाहता था इसीलिए उसने अरबों में लिखे कुरआन को महत्व दिया ।

" (खुदा जो) निहायत मेहरबान , (1) उसी ने कुरआन की तालीम फरमायी, (2) उसी ने इंसान को पैदा किया । (3) उसी ने उस को बोलना सिखाया । " (55 : 1 – 3)

कुरान के अरबी भाषा में होने का महत्व दे कर मुहम्मद ने कुरआन और अरबी राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में पुष्टि की है ।

" हमने इस कुरआन को अरबी में घोषित किया है, ताकि तुम समझ सको । (12 : 2) "

दूसरे देशों के मुसलमान कहते हैं कि कुरआन सारी मानव जाति के लिए दिव्य संदेश है । वास्तव में कुरआन अरबी भाषा में अरबों के लिए लिखा गया था जिसका मुख्य उद्देश्य अरब राष्ट्रीयता को बढ़ावा देना है । उदाहरणतयाः

" यह किताब (खुदा ए) रहमान व रहीम (की तरफ) से उतरी है । (2) (एसी) किताब जिसकी आयतें खुले (मतलब वाली) हैं , यानी कुरआने अरबी उन लोगों के लिए है जो समझ रखते हैं । " (41 : 2 – 3)

फिर इस बात की पुष्टि की गयी है कि कुरआन अरबों के लिए है । (रोशन नाम की कसम, (2) कि हममे इस को अरबी कुरआन बनाया है , ताकि तुम समझो । (3) और यह बड़ी किताब (

यानी लोहे महफूज) में हमारे पास (लिखी हुई और) बड़ी फजीलत और हिकमत वाली है । (4) भला इसलिए कि तुम हद से निकले हुए लोग हो , हम तुम को नसीहत करने से बाज रहेंगे । " (43 : 2 – 5)

इससे स्पष्ट है कि कुरआन का सन्देश अरबों के लिए है यद्यपि मुल्ला लोग इस को मानव जाति के लिए बनाने का बहुत प्रयास करते हैं ।

कुरआन में यह भी लिखा है :

" और इसी तरह तुम्हारे पास अरबी कुरआन भेजा है, ताकि तुम बड़े गांव (यानी मक्के) के रहने वाले को और जो लोग उस के इर्द गिर्द रहते हैं , उन को रास्ता दिखाओ ।" (41 : 7)

इस आयत में स्पष्ट लिखा है कि कुरआन का संदेश मक्के और उसके इर्द गिर्द रहने वालों के लिए है । क्योंकि केवल अरब ही मक्के के आसपास रहते थे इसीलिए इन आयतों से यह स्पष्ट होता है कि कुरआन एक अरबी ग्रंथ है जो अरबों के लिए है । इसको मानव जाति का ग्रंथ कहने का तात्पर्य यह है कि जो भी कुरआन में विश्वास करते हैं वे अरबों की महत्ता को भी स्वीकार करें ।

कुरआन ही एक ऐसा ग्रंथ है जिस में बारबार संसार में मनुष्यों के अतिरिक्त मनुष्यों जैसी क्षमता वाली किसी और जाति (मनुष्यों से भिन्न) का वर्णन है । जिन्नों को किसी ने कभी देखा तो नहीं परन्तु मुल्लालोगों का कथन है कि कुरआन में सूक्ष्म जीवों को जिन्न कहा गया है । ये मुल्ला तो कुरआन का निरादर करते हैं क्योंकि कुरआन जैसा ग्रंथ लिखने के लिए बुद्धि चाहिए जो कि सूक्ष्मजीवों में नहीं ।

यह सिद्ध करने के लिए कि इस्लाम अरब राष्ट्रीय आन्दोलन है मुख्य बातों को दोहराता हूँ

1. मुहम्मद ने कहा था कि वह सर्वोत्तम व्यक्ति है, उसका सम्प्रदाय कुरेश सर्वश्रेष्ठ सम्प्रदाय है और अरब सब जातियों में श्रेष्ठ है ।

2. इसके लिए मुहम्मद ने इलहाम की पुरानी शामी प्रथा से काम लिया और स्वयं पैगम्बर बन गया जिसका अपना कोई स्वार्थ नहीं । वह तो केवल भगवान की आज्ञा का पालन करता है ।

3. जैसे यहूदियों का राष्ट्रीय भगवान याह्वे था, मुहम्मद ने उसी प्रकार काबे के स्वामी अल्लाह को जो उसके सम्प्रदाय कुरेशों का भगवान था चुना और उसे सृष्टि का एक मात्र भगवान घोषित किया ।

4. मुहम्मद ने काबे को इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ स्थान घोषित किया ताकि हर मुसलमान अरबों और अरब देश की महत्ता स्वीकर करे ।

5. मुहम्मद ने हज्ज की पुरानी प्रथा को इस्लाम का मूल सिद्धान्त बनाया जिससे दूसरे देशों के मुसलमान अरब को पावन मानें और जिससे अरबों की आय का साधन बना रहे ।

6. मुहम्मद ने कहा कि भगवान का समझौता इब्राहीम और इस्हाक से नहीं वरन् इब्राहीम और इस्माईल से था । सब जानते हैं कि अरब इस्माईल की संतति है । स्पष्ट है कि इस्लाम का उद्देश्य अरबों की महत्ता स्थापित करना है ।

7. अरबों की राष्ट्रीय महत्ता स्थापित करने के लिए काबे ंका महत्व यहूदियों के जेरुसलम से कही अधिक है । इससे अरबों की राष्ट्रीयता तो स्थापित होती ही है और यह भी कि दूसरे देशों के मुसलमान अपनी राष्ट्रीयता को छोड़कर केवल मुसलमाना कहलाना चाहते हैं । वे जानबूझकर स्वर्ग पाने के प्रलोभन से अरबों के परिचारक बन गए हैं । याद रहे कि अरबों से शत्रुता करने वालों को मुहम्मद स्वर्ग नहीं दिलवाएंगा ।

मुहम्मद ने कहा थाः

क– जो लोग कुरेशों (मुहम्मद के सम्प्रदाय) के शत्रु हैं अल्लाह उन्हें नष्ट कर देगा । " (Sahih Tirmzi Vol. 2 Pg 835)

ख– मुहम्मद ने सुलेमान फारसी (ईरानी जो मुसलमान बन गया था) से कहा " यदि तुम अरबों के विरोधी हो तो तुम मेरे विरोधी हो) (Sahih Tirmzi Vol. 2 Pg 840)

ग– मुहम्मद ने कहा " जो अरबों से अच्छा व्यवहार नहीं करते और जो ऐसे लोगों से प्रेम रखते हैं मैं उनका मध्यस्थ नहीं बनूंगा । (Sahih Tirmzi Vol. 2 Pg 840)

इन हदीसों (मुहम्मद के कथनो) को सभी लोग सत्य नहीं तो इनका कभी से बहिष्कार कर दिया जाता । इनके सत्य होने का प्रमाण इनका मुसलमानों का अरब लोकाचार के अनुकूल होना है ं।

8. मुहम्मद ने इस्लाम में यह कह कर अपने आप को परम पावन पदवी दी है किः
क– वह मनुष्यों और भगवान में मध्यस्थ है ।
ख– वह संसार के लिए भगवान का उपहार है । और
ग– चह संसार के लिए आदर्श व्यक्ति है ।

मुहम्मद अरबों से प्रेम करता था इसीलिए अरबों के प्रति श्रद्धा इस्लाम का मूल सिद्धान्त है ।

9. मुसलमाना होने के लिए अल्लाह और मुहम्मद दोनों को मानना आवश्यक है जैसे ईसाई होने के लिए इसाईसियों के त्रिदेव सिद्धान्त को मानना । केवल मुहम्मद को ही नहीं, काबे के स्वामी अल्लाह को भी जो अरबों की एक मूर्ति था । अतः इस्लाम का अभिप्राय अरबों की महत्ता स्थापित करना है ।

10. कुरआन अरबी ग्रथं है ं। इसका मुख्य अभिप्राय अरबों का मार्गदर्शन है । इसको समस्त मानव जाति का ग्रंथ कहना दूसरे देशों के मुसलमानों को अरबों की राष्ट्रीयता के अधीन करना है ।

यह सब अरब राष्ट्रवाद का आधार है कुछ जातिवाद पर निर्भर है और कुछ चमत्कारिक है । अरब राष्ट्रवाद की नींव रख कर मुहम्मद अरब साम्राज्यवाद स्थापित करने के लिए एक शक्तिशाली सेना का निर्माण करनाचाहता था ।

इसके लिए उसने जिहाद का आविष्कार किया । जिहाद क्या है ? जिहाद मुसलमानों को अल्लाह का आदेश है कि वे सब दूसरों समाप्त करें । चाहे उन्होंने मुसलमानों को कोई हानि न पहुँचाई हो । उनका दोष तो केवल यह है कि यह मुसलमान नहीं ।

" मुझे अल्लाह ने काफिरों (जो मुसलमान नहीं) से युद्ध करेन करने का आदेश दिया है जब तक वे अल्लाह और उसके पैगम्बर पर विश्वास नहीं लाते और इस्लमा के विधानों का पालन नहीं करते । तभी उनके जीवन और उनकी सम्पत्ति सुरक्षित होगी । (Sahih Tirmzi Vol. 2 Pg 192)

कुरआन में निम्नलिखित आयतों मे यह बताया गया है कि मुसलमानों को क्यों दूसरों पर आतंक कर के उन्हें नष्ट करनाचाहिए ।

" खुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल खरीद लिए हैं (और इसके) बदले में उनके लिए बहिश्त (तैयार की है) । ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं ।तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं । यह तौरात और इंजील और कुरआन में सच्चा वायदा है जिसका पूरा करना उसे जरूर है और खुदा से ज्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तुमने उससे किया है , उससे खुश रहो और यही सबसे बड़ी कामयाबी है । (9 : 111)

स्पष्ट है कि जिहाद अल्लाह और मुसलमानों में समझौता है । अल्लाह मुसलमानों को सब दूसरों को लूटने और मारने के पुरुस्कार में स्वर्ग देने का वचन देता है । इसीलिए इस्लाम में लूटमार और हत्या पावन कर्तव्य है जिनका महान पुरुस्कार स्वर्ग है । कुरआन दूसरों (जो मुसलमान नहीं) की लूट मार और हत्या को उचित ठहराता है ।

" पैगम्बर को मुनासिब नही कि उसके कब्जे में कैदी रहें, जब तक (काफिरों को कत्ल करके) जमीन में कसरत से खून (न) बहा दे । तो गनीमत का जो माल तुतम को मिला है , उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिए) पाक हलाल है और खुदा से डरते रहो । बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है । (8 : 67 , 8 : 69)

अल्लाह को न मानने वालों पर आक्रमण कर के पहले तो बहुतों का हत्या करने, फिर उनकी सम्पत्ति और स्त्रियों को छीनने का नाम जिहाद है । इस्लाम में मुसलमानों का जन्म सिद्ध अधिकार हे कि वे लूट का जैसे चाहें प्रयोग करें ।

मानव जाति के प्रति ऐसे व्यवहार को सदाचार कैसे कहा जा सकता है ? इसीलिए मैं इस्लाम को आतंकवाद कहता हूँ । मुसलमान अपने देशों मे तो दूसरों को मानव अधिकार देते नहीं परन्तु दूसरों के देशों में मानव अधिकार मांगते हैं । यह करना भी कि मुसलमान देशों में इंजील के अनुगामी यहूदियों और इसाईयों को मुसलमानों के समान अधिकार हैं केवल कल्पना है ।

सर्वशक्तिमान अल्लाह दूसरों (जो मुसलमान नहीं) को मानव अधिकार देने का विरोधी क्यों है ? कारण यह है कि मुहम्मद अरबों की सत्ता (जो बेजैन्टीन और ईरान के गौरव के सम्मुख फीकी थी) बढ़ाने के लिए एक अरब साम्राज्य की स्थापना करना चाहता था । बजैन्टीनी और ईरानी अपने राष्ट्रों के लिए सदा युद्ध के लिए तत्पर रहते थे परन्तु अरब छोटे छोटे सम्प्रदायों में बंटे थे । मुहम्मद ने अल्लाह के नाम पर अरबों का संगठन किया और उनको (अरबों के अतिरिक्त) दूसरों के देशों, उनकी सम्पत्ति और स्त्रियों को युद्ध में जीतने को गर्व का कार्य कहा । मैंने अरबों और अरबों को छोड़कर दूसरों प्रयों जानबूझ कर किया है और मुसलमानों और दूसरों का प्रयोग नहीं किया । कारण यह है कि मुहम्मद के जीवन काल में प्रायः सभी मुसलमान अरब ही थे । उस समय अरबों और मुसलमानों में कोई अन्तर था ही नहीं और मुहम्मद के लिए अरबों को इस्लाम (जो स्वर्ग दिलवा सकता था) के नाम पर युद्ध के लिए प्रेरित करना सरल था ।

अल्लाह को मुसलमानों के अतिरिक्त सबसे घृणा है क्योंकि वे अल्लाह को भगवान मान कर उसकी पूजा नहीं करते । कुरआन के अनुसार अल्लाह सृष्टि का सृजनहार है । वह सर्वशक्तिमान , सर्वज्ञ , पूर्ण स्वतंत्र और सब इच्छाओं के ऊपर है । अल्लाह के यह गुण मिथ्या हैं **क्योंकि वह प्रतिष्ठा, प्रेम ओर पूजा की इच्छा में पागल है । यदि मनुष्य अल्लाह का पूजे तो वह प्रसन्न होता है और यदि न पूजे तो अल्लाह महा दुखी होता है । इसीलिए वह जो भी मुसलमान नहीं उनको गाली देता है और नरक की यातनाओं का डर दिखाता है ।यदि नरक के डर से काम नबने तो वह स्वर्ग का प्रलोभन देता है । यह अल्लाह कैसा भगवान है जिसका अपना आनन्द मनुष्य की मान्यता पर निर्भर है ?** उसकी पूजा करवाने की इच्छा इतनी प्रबल है कि वह पूर्ण या स्वतन्त्र तो हो ही नहीं सकता । यदि भगवान चाहता तो वह ऐसे मनुष्यों का निर्माण करता जो भगवान को पूजे । या तो अल्लाह को पूजा का इच्छुक नहीं होना चाहिए या वह सृजनहार नहीं ।

अपनी महत्ता के लिए जनसाधारण प्रशंसा चाहता है । इसका कारण यह है कि वह दूसरों पर अपनी धाक जमाना चाहता है ताकि वे उसकी आज्ञा मानें । पुराने काल में प्रार्थी के लिए सम्राट को दण्डवत प्रणाम करना भी सम्राट का अपनी महत्ता सिद्ध करना ही था । प्रशंसा का अर्थ ही है कि प्रशंसा करने वाला प्रशंसनीय के प्रति अपनी हीनता स्वीकार करे ।

जैसाकि पहले ही लिखा है अल्लाह का आविष्कार मुहम्मद ने किया था ।अल्लाह का अपना तो कोई अस्तित्व है ही नहीं वह तो काल्पनिक है । इसका उद्देश्य तो केवल यह है कि पैगम्बर भगवान के नाम पर अपनी सत्ता जमा सके ।

इस्लाम में मुहम्मद ही कर्ता धर्ता है । अल्लाह तो केवल नाम के लिए है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बरतानिया का राज्य है । यद्यपि नाम में राज्य सम्राज्ञी करती है परन्तु उसको हर आदेश प्रधानमंत्री देता है । इसी प्रकार मुहम्मद अपनी पूजा करवाना चाहता है और वह किसी को भी जो मुहम्मद की सत्ता को नहीं मानता जीने नहीं देना चाहता । इसकी पुष्टि कुरआन में है जैसेः

" खुदा और उसके फरिश्ते पैगम्बर पर दरूद भेजने हैं । मोमिनों ! तुम भी पैगम्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो । " (33 : 56)

" आशीर्वाद और शान्ति प्रार्थना " (दरूद और सलाम) पूजा के प्रधान साधन हैं । सभीमतों मे मनुष्य भगवान की पूजा करते हैं परन्तु इस्लाम में भगवान और सभी देवता मुहम्मद को पूजते हैं । मुहम्मद अपने आप को अल्लाह का सेवक कहता है पर वास्तव में मुहम्मद ही इस्लाम का कर्ता धर्ता है और अल्लाह के नाम मात्र के लिए है ।

यदि मुहम्मद ने कहा होता कि वह उन सब को जो अरब राष्ट्र के लिए युद्ध में मारे जाएगें स्वर्ग देगा तो कोई भी उसकी बात न सुनता । परन्तु अल्लाह के नाम पर दूसरों (जो अरब नहीं थे) से युद्ध की प्रेरणा से उसने अरब राष्ट्र की स्थापना के लिए दैवी शक्ति की सहायता ली । अरबों के लिए सांसारिक पुरुस्कार तो दूसरों की सम्पत्ति और स्त्रियों को छीनना और उन पर राज करना बताया और यदि दुर्भाग्यवश कोई अरब युद्ध में मारा गया तो उसका पुरुस्कार तो और भी अधिक था । वह तो सीधा स्वर्ग जाएगा ।

इस्लाम के स्वर्ग की व्याख्या देने से पहले यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि मैं इस बात की खोज करूं कि क्या अल्लाह वास्तव में हैं और कुरआन अल्लाह की पुस्तक है या ये दोनों मुहम्मद के आविष्कार हैं ।

मुझे पूरा विश्वास है कि अल्लाह और कुरआन दोनों ही इलहाम की शामी प्रथा पर निर्धारित मुहम्मद की राष्ट्रीय योजना के अंग है। ।यह इन बातों से स्पष्ट हो जाएगा ।

सर्वप्रथम भगवान का विधान सारी सृष्टि के लिए सब के लिए एक समान होता है । इन में द्वन्द और भेद भाव कदापि नहीं होता । सभी कुछ निश्चित होता है । जैसे पानी के लिए 2 भाग हाइड्रोजन और 1 भाग आक्सीजन गैस की निश्चित ढंग से मिलाना पड़ता है । इसमें कोई भी अन्तर नहीं हो सकता । मुहम्मद ने कुरआन में अल्लाह का आदेश कहा जिसे बदला नहीं जा सकता ।

" उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं । " (6 : 115)

यह वास्तविकता नहीं । मुहम्मद स्वयम् अल्लाह के विधान से ऊपर था । उदाहरणतयाः

1. मैंने पहले भी किबले के विषय में लिखा है ।यदि सभी अल्लाह का विधान है तो ऐसे महत्वपूर्ण विषय में मुहम्मद का कोई हाथ नहीं होना चाहिए । वह इस विषय में इसीलिए निर्णय कर सकता था क्योंकि वह ही इस्लाम का कर्ताधर्ता था ।

2. कुरआन में विवाह के बिना सहवास निषिद्ध है । परन्तु मुसलमान ऐसा करते हैं । स्वयम् मुहम्मद की एक रखैल थी । कुछ लोगों का ऐसा भी कहना है कि मुहम्मद की दो रखैल थी ।

3. कुरआन में किसी को भी एक समय में चार से अधिक स्त्रियों को रखना मना है परन्तु मुहम्मद की एक ही समय में नौ पत्नियां थी ।स्पष्ट है कि मुहम्मद अल्लाह के विधान से ऊपर था या फिर अल्लाह मुहम्मद का ही आविष्कार था ।

4. कुरआन के अनुसार यह आवश्यक है कि पति अपनी सभी पत्नियों से एक जैसा व्यवहार करेः

" जो औरत तुमको पसन्द हो, दो दो या तीन तीन या चार चार, उनसे निकाह कर लो और अगर इस बात का डर हो कि सब औरतों से बराबर का व्यवहार न कर सकोगे तो एक औरत ही काफी है । " (4 : 3)

परन्तु जब मुहम्मद की पत्नियों ने मुहम्मद के व्यवहार पर असंतोष जताया तो अल्लाह ने मुहम्मद को सब पत्नियों से एक जैसा व्यवहार करने से छुट्टी दे दी । " (और तुमको यह अख्तियार है कि) जिस बीबी को चाहा, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुम ने अलाहिदा कर दिया हो, अगर उसको फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं । " (33 : 51)

स्पष्ट है कि अल्लाह का विधान मुहम्मद पर लागू नहीं होता क्योंकि अल्लाह मुहम्मद की सुविधाके अनुसार विधान को बनाता और बदलता रहता था ।

5. कुरआन के अनुसार हर मुसलमान स्त्री को विवाह करने का अधिकार है ।इसमें स्त्री के पिता के मत से कोई अड़चन नहीं पड़ सकती । परन्तु जब मुहम्मद की पुत्री फातिमा के पति अली ने अबूजहल की पुत्री (जो मुसलमान थी) से दूसरा विवाह (जिसकी इस्लाम में स्वीकृति है) करना चाहा तो मुहम्मद ने अली को रोक दिया । अबूजहल के मुसलमान न होने के कारण कुरआन में कोई मनाही न थी । इसका कारण क्या था ? मुहम्मद ने मंच पर चढ़ कर कहा :

" अली को चाहिए कि मेरी पुत्री को तलाक दे क्योंकि मेरी पुत्री मेरा अंश है । जो उसको ठेस पहुँचाता है वह मुझे ठेस पहुँचाता है । जो उसे अशांत करता है वह मुझे अशांत करता है । "
(Sahih Muslim Hadith : 5999)
कुरआन के इस आदेश का क्या हुआ ?
" उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं " (6 : 115)
6. इस्लाम के पहले भी अरब मक्के को पावन शरणस्थान मानते थे अर्थात् इस पर आक्रमण करना निषिद्ध था । कुरआन में मक्के को परम पावन नगर कहा गया है फिर भी मुहम्मद ने 10000 सैनिको के साथ मक्के पर आक्रमण किया था ।

सहीह अल्बोखारी के नवें अध्याय के 59 वीं हदीस में लिखा है कि : अल्लाह ने मक्के को पावन शरण स्थान बनाया है । यह पहले भी था और भविष्य में भी रहेगा । अल्लाह ने कुछ घण्टों के लिए मुझे इस पर आक्रमण करने की आज्ञा दी थी ।"

प्रथा के अनुसार मक्के को इतना पावन माना जाता था कि वहां वृक्ष काटने की भी मनाही थी ।

ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि मक्के के निवासी हार स्वीकार करके रक्तपात से बचे । स्पष्ट है कि यदि वे युद्ध करते तो मक्का को जीतने के लिए जितना भी समय चाहिए था देता । यह आश्चर्यजनक नहीं तो और क्या है । अल्लाह अपने " अटल विधान " को मुहम्मद के लिए बदल देता है । अल्लाह तो अवसर ढूंढता है कि मुहम्मद को कैसे प्रसन्न करे ।

सही अलबोखारी के तीसवें अध्याय की 48 वीं हदीस के अनुसार जब हकीम की बेटी खौला ने मुहम्मद से विवाह करने का प्रस्ताव किया तो मुहम्मद की सबसे छोटी पत्नि आयशा बोली " क्या एक स्त्री को किसी पुरुष को विवाह का प्रस्ताव करते लाज नहीं आती " ?

परन्तु जब आयशा ने यह दिव्य समाचार सुना " (मुहम्मद), तुम अपनी जिस बीबी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो ।" (33 : 51) तो आइशा बोली " ओ अल्लाह के पैगम्बर, स्पष्ट है कि अल्लाह तुम्हें प्रसन्न करने में देर नहीं करता । "

आयशा ने ठीक ही कहा । अल्लाह (जो अपने को सृजनहार और सर्वशक्तिमान कहता है) का एक मात्र कर्तव्य मुहम्मद को प्रसन्न करना है इसीलिए अल्लाह सृजनहार और सर्वशक्तिमान हो ही नहीं सकता । अल्लाह जो अपने विधान को एक मनुष्य को प्रसन्न करने के लिए बदल सकता है कभी भी भगवान नहीं हो सकता । अल्लाह तो मुहम्मद का आविष्कार है जिसका एकमात्र कर्तव्य मुहम्मद के वचनों और कर्मों को दिव्य सिद्ध करना है ।

यही कारण है कि जिहाद अर्थात् अल्लाह के नाम पर दूसरों (जो मुसलमान नहीं) की लूटमार और हत्या कर के स्वर्ग प्राप्त करना हर मुसलमाना का ध्येय है । स्वर्ग के प्रलोभन के बिना सम्भवतः अरब दूसरी जातियों के विनाश के लिए इतनी उत्साह से नहीं लड़ते । मुहम्मद ने अरब राष्ट्र स्थापित करने के लिए जिस चतुरता से स्वर्ग के प्रलोभन का प्रयोंग किया उस प्रकार कभी किसी और ने नही किया ।

इस्लाम में स्वर्ग की परिभाषा क्या है ? अरब लोग मरुस्थल में रहते थे जहां पर पानी और वृक्षों का अभाव था और जीवन दुर्गम था । गर्मी, भूख, और संकटों में रहने वाले छायादार स्थानों, कुओं, स्रोतों, और नदियों के सपने देखते थे । इसीलिए कुरआनमें स्वर्ग का चित्रण इस प्रकार किया है ।

" और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उनको खुशखबरी सुना दो कि उनके लिए (नेमत के) बाग हैं, जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं, जब उन्हें उनमें से किसी किस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा । " (2 : 25)

अरबों को इस्लाम की आवश्यकता इससे प्रकट होती है । (13 : 35) में यही दोहराया गया है । आगे चल कर स्वर्ग के उपहार बढ़ते जाते हैं ।

" मगर जो खुदा के खास बन्दे हैं । (40) यही लोग हैं , जिनके लिए रोजी मुकर्रर है । (41) यानी मेवे और उनका एजाज किया जाएगा । (42) नेमत के बागों में (43) एक दूसरे

के सामन तख्तों पर (बैठे होंगे), (44) शराबे लतीफ के जाम का उन में दौर चल रहा होगा, (45) जो रंग की सफेद और पीने वालों के लिए (लज्जत) की बात होगी , (46)न उस से सर दर्द हो और न वे उससे मतवाले हों, (47) और उनके पास औरतें होंगी , जो नजर नीचे रखती होगीं और आंखे बड़ी बड़ी , (48) गोया वह महफूज अंडे हैं ", (46) (37 : 40 – 49)
फिर हूरों की और व्याख्या की गयी है ।
" इन में नीची निगाह वाली औरतें हैं जिन को जन्नत बालों से पहले न किसी इंसान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (56) गोया वे याकूत और मर्जान हैं । " (58) (55 : 56 – 58)

" रहमान " में स्वर्ग का पूरा चित्र खींचा गया है । वहां अनार और खजूर के वृक्ष ही वृक्ष हैं । वहां शीतल मंडपों में गालीचों पर हरे तकियों के सहारे अनेक सुन्दर हूरें विराजमान है ।चारों ओर पानी के स्रोत और हरियाली है ।

(44 : 54) में कहा गया है कि हूरें मुसलमानों को मिलेंगी । फिर (47 : 15) में स्वर्ग के वैभव की प्रशंसा की गयी है ।

" जन्नत जिसका परहेजगारों से वायदा किया जाता है, उसकी खूबी यह है कि इस में पानी की नहरें हैं, जो बू नहीं करेगा और दूध की नहरें हैं, जिस का मजा नही बदलेगा और शराब की नहरें हैं, जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज्जत है और शहदे मुसफ्फा हैं (जो मिठास ही मिठास है) और वहां उन के लिए हर किस्म के मेवे हैं और उन के परवरदिगार की तरफ से मरिफरत है । (क्या ये परहेजगार) उन की तरह (हो सकते हैं) जो हमेशा दोखज में रहेंगे और जिनको खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उन की अंतड़ियों को काट डालेगा । " (47 : 15)

स्वर्ग के वैभव को और भी बढ़ चढ़ कर बताने के लिए मुहम्मद ने नरक की यातनाओं का बखान भी इसी आयत में किया है । लिखा है कि नरक के वासियों (जो मुसलमान नहीं) को " जिन को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उनकी अंतड़ियों को काट डालेगा ।
" स्वर्गवासियों के लिए और भी पुरुस्कारों का वर्णन है । (52 : 22 – 24) के अनुसार मुसलमानों की सेवा नवजवान खिदमतगार (जो ऐसे होंगे,) जैसे छिपाए हुए मोती करेंगे । वहां पर जिस तरह के मेवे और गोश्त को उन का जी चाहेगा, हम उनको अता करेंगे । वहां वे एक दूसरे से जामे शराब झपट लिया करेंगे .... ।" और फिर सुन्दर हूरें तो मिलेंगी ही ।

स्वर्ग के सुखों का वर्णन करने के पश्चात अल्लाह नरक की यातनाओं का वर्णन करता है ।
" फिर तुम ऐ झुठलाने वाल गुमराहों ! (51) थूहर के पेड़ खाओगे, (52) और इसी से पेट भरोगे, (53) और इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, (54) और पियोगे भी तो इस तरह जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, (55) बदले के दिन यह उन की मेहरबानी होगी । (56) (56 : 51 : 56)
फिर स्वर्ग का और वर्णन है :

" (नोकर चाकर) चांदी के बर्तन लिए हुए उन के चारों ओर फिरेगें और शीशे के (निहायत साफ सुथरे) गिलास, (15) और शीशे भी चांदी के, जो ठीक अन्दाजे के मुताबिक बनाए गए हैं, (16) और वहों उनको ऐसी शराब भी पिलायी गयी जिसमें सोंठ की मिलावट होगी । (17) यह बहिश्त में एक चश्मा है, जिस का नाम सलसबील है । (18) और उन के पास लड़के आते जाते रहेंगे , जो हमेशा एक ही हालत में आऐगें । जब तुम उन पर निगाह डालो, तो ख्याल करो कि वे बिखरे हुए मोती हैं । (16) और बहिश्त में (जहां) आंख उठाओगे , कसरत से नेमत और शानदार सल्तनत देखागे । (10) उन के बदनों पर हरी दीबा और अतलस के कपड़े होंगे । और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएगें और उन का परबरदिगार उन को निहायत पाकीजा शराब पिलाएगा । (21) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कोशिश (खुदा के यहां) मकबूल हुई । (22) " (76 : 15 – 22)

हूरों (सुन्दर कन्याओं) के वर्णन का अन्त ही नहीं । यह " बड़े बड़े कुचों वाली " अप्सराओं मुसलमानों की सब तरह सेवा करेंगी ।

हदीसों में विशेषकर (James Tirmzi Vol. 2) अध्याय " स्वर्ग की स्त्रियां " पृष्ठ 135 – 140 में हूरों का वर्णन इस प्रकार है ।

1. हूरों के शरीर पारदर्शी हैं ।
2. हूरों का सफेद रंग देखकर आंखे चकाचौंध हो जाती हैं । उनकी आंखे बड़ी बड़ी और काली हैं
3. लज्जावश हूरों की आंखे झुकी झुकी हैं ।
4. हूरों के शरीर शीशे के बर्तन में लाल मदिरा के समान हैं ।
5. हूरें मीठा बोलती हैं और अपने साथियों से प्रेम करती हैं ।
6. हूरें अक्षतयोनि कन्याएं हैं और उनको पीड़ा का आभास नहीं होता ।
7. हूरों के कुच गोल और सुदृढ़ हैं । वे लटकते नही ।
8. हूरें राज भवनों मे रहती हैं ।
9. मुहम्मद ने कहा " हर मुसलमान पुरुष का पुरुषत्व सौ गुना हो जाएगा "।
10. मुसलमानों का विश्वास है कि स्वर्ग में हर मुसलमान को सत्तर हूरें और अनेक सुकुमार मिलेंगे ।

अब स्वर्ग के रूप का व्याख्यान करने की और क्या आवश्यकता है ? उस में प्रवेश करने के लिए जिहाद आवश्यक है ।

" (मुसलमानों !) तुम पर (खुदा के रास्ते) लड़ना फर्ज कर दिया है, वह तुम्हें नागवार तो होगा । मगर अजब नहीं कि एक चीज तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुकसानदेह हो । और (इन बातोंाको) खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते । " (2 : 116)

" ऐ नबी ! मुसलमानों को जिहाद पर उभारो । अगर तुम में 20 आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे ख तो दो सौ काफिरों पर गालिब रहेंगे और अगर (सौ) ऐसे होगे, तो हजार पर गालिब होगें इसलिए कि काफिर ऐसे लोग है कि कुछ भी समझ नहीं रखते । " (8 : 65)

" खुदा ने मोमिनों से उनकी जानें और उन के माल खरीद लिए है(और इसके बदले में उन के लिए बहिश्त तैयार की है । ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे जाते भी हैं । यह तौरात और इंजील और कुरआन में सच्चा वायदा है , जिसका पूरा करना उसे जरूर है और खुदा से ज्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है तो जो सौदा तुम ने उससे किया है, उससे खुश रहो और यही बड़ी कामियाबी है । " (9 : 111)

इस्लाम में हर मुसलमान का कर्तव्य है कि वह स्वर्ग पाने के लिए दूसरों का नाश करें । इस्लाम में जिहाद ही सब से बड़ी पूजा है और जो कोई जिहाद में भाग लेना नहीं चाहता वह सच्चा मुसलमान नहीं । कुछ मुसलमान विद्वान ढोंग करते हैं कि जिहाद आत्मरक्षा के लिए युद्ध है । यह इस्लाम के इस मूल सिद्धान्त का मिथ्या रूपी कथन है । एक दो आयतों से ऐसा अर्थ निकाला जा सकता है पर इस्लाम का इतिहास इस बात काखंडन करता है । इरान, मिस्र और हिन्दुस्तान पर मुसलमानों के आक्रमण साम्राज्यवादी थे । यह सत्य है कि मक्का के लोगों ने मुहम्मद को पीड़ित किया था । परन्तु इन आयतों का मनोरथ तो केवल यह था कि यदि आवश्यकता पड़े तो कुछ समय के लिए मुसलमान आत्मरक्षा और उदारता का ढोंग करें – केवल उस समय तक जब तक के अधिक बलशाली न हो जांए । जिहाद आक्रमणकारी युद्ध है क्योंकि इस्लाम में मुसलमानों का दायित्व है कि लूट मार , हत्या और स्त्री अपहरण कर के दूसरों पर शासन करे । इस्लाम मुसलमानों को दूसरों से निरतंर युद्ध करने का आदेश देता है ।

" मुझे अल्लाह का आदेश है कि मै दूसरों से तब तक युद्ध करूं जब तक वे यह स्वीकार न करें कि अल्लाह ही एक मात्र भगवान है और मैं उसका पैगम्बर हूँ और मैं कुरआन लाया हूँ ।

जब वे यह मान लें तभी उनका जीवन और उनकी सम्पत्ति सुरक्षित होगी .... " (Sahi Muslim : hadis 31)

यदि अल्लाह से भगवान का तात्पर्य है तो यहूदी , इसाई और हिन्दू सदा ही भगवान में विश्वास रखते आए हैं । अतः यह भगवान में विश्वास रखने या चाहता था और भगवान के स्थान पर अपनी पूजा करवाना चाहता था) को मानने या न मानने का है । इलहाम के सिद्धान्त का उद्देश्य तो केवल एक ही है कि पैगम्बर अपने आप को भगवान का रूप दे सकें । इस्लाम में अल्लाह और देवता सभी मुहम्मद के पुजारी हैं जिससे यह विदित होता है कि मुहम्मद की पूजनीय बनने की इच्छा बहुत प्रबल थी ।

अरबों को उनका राष्ट्रीय भगवान (अल्लाह), कुरआन और पैगम्बर (मुहम्मद) दे कर मुहम्मद अरबों की एक अजेय सेना का निर्माण करना चाहता था । इस कार्य के लिए जिहाद का सिद्धान्त बहुत उपयोगी था । यदि जिहाद से अरब युद्ध जीत लें तो दूसरों की सम्पत्ति और स्त्रियों का अपहरण कर के उनको पृथ्वी पर ही स्वर्ग मिलेगा । और यदि वे युद्ध में मारें गए तो उनको हूरों के सहित स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया । हानि का तो प्रश्न ही नहीं था ।

जब मुहम्मद सितम्बर 622 ईस्वी में मदीने गया तो वह एक सेना इकट्ठी करने में जुट गया । मुहम्मद के एक अच्छे सेनापति होने के कारण ही लोगों ने उसकी बात सुनी ।

पहले तेरह साल में केवल 70 लोग मुहम्मद के मत के अनुगामी बने । और तो और उसके अपने सम्प्रदाय कुरेश के लोग भी मुहम्मद की हत्या करने की योजना में दूसरे सम्प्रदायों में मिल गए । जब तक मुहम्मद मक्के में था उसके अनुगामियों की संख्या जिहाद के लिए पर्याप्त नहीं थी । मदीनें में उसको और अनुगामी मिले किन्तु 70 अनुगामियो ं से क्या हो सकता है ? मुहम्मद तो ईरानियों और बैजन्टीनियों से भी शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण करना चाहता था । राष्ट्रों को जीतने का एक ही साधन था अर्थात् शक्तिशाली सेना । मुहम्मद ने अपनी युद्ध क्षमता का नए ढंग से प्रयोग किया । उसने जिहाद का आविष्कार किया जिससे अल्लाह के नाम से लूटने को परम पावन कर्म कहा । जीतने पर लूट के धन और अपहरण की गयी स्त्रियों का पृथ्वी पर ही स्वर्ग के समान भोग और युद्ध में मृत्यु होने पर तो सीधे स्वर्ग का वास जिसमे ंभोग पदार्थों और हूरों की कमी नहीं होगी ।

मदीने में मुहम्मद के अनुगामियों में से थोड़ों ने ही काम धन्धे आरम्भ किए । बाकी सब ने लूट मार को ही अपना धन्धा बनाया । मदीने के दस सालों के वास में मुहम्मद ने 65 लूटमार की योंजनाएं बनाईं । इनमें से 27 लूट मर के आक्रमण तो स्वयम् उसके नेतृत्व में हुए ।
जनवरी 624 ईस्वी में मुहम्मद के अनुगामियों ने मक्के के निकट एक कारवां पर आक्रमण किया । इस आक्रमण से मुसलमानों ने पावन शरण स्थान मक्के की चिर काल से चली आयी पावनता को भी भंग किया । फिर मार्च 624 ई0 में 315 व्यक्तियों के साथ मुहम्मद ने उमाय्या सम्प्रदाय के एक धनी व्यक्ति अबुसूफयान के कारवां पर आक्रमण किया । अबूसूफयान तो बच कर निकल गया परन्तु अबुजाहल ने जिसके पास 800 सैनिक थे मुहम्मद को सीधा करने की ठानी । 15 मार्च 624 ईसवी बद्र के युद्ध में मुहम्मद की विजय हुई जिससे न केवल उसकी युद्ध कुशलता की धाम जम गयी पर उसकी पैगम्बरी का मान्यता भी बढ़ गयी । मुहम्मद के पास अपने अनेक हथियार थे और वह स्वयं युद्ध में भाग लेता था जिनमें अधिकतर उसकी जीत होती थी । केवल एक बार उहद में उसकी हार हुई ।

मुहम्मद ने अरबों को कुशल सैनिक बनाने के लिए मदीने के दस सालों में 65 धावों की योजनाएं बनायी ंऔर स्वयं 27 धावों का निर्देशन किया । 630 ईसवी में मुहम्मद की सेना मं 30000 सैनिक थे जब उसने सीरिया पर धावा बोला । धीरे धीरे युद्ध कुशलता और राजनैतिक कुशलता के कारण वह अरब देश का सम्राट माना जाने लगा । उसने अरबों के स्वाभिमान को इतना पुष्ट किया कि मुहम्मद की मृत्यु के 20 साल में ही अरबों ने बैजन्टीन और ईरान जैसे शक्तिशाली राष्ट्रों को पराजित किया ।

मुहम्मद के कारण ही अरबों की संस्कृति की अब भी विकास हो रहा है यद्यपि राजनैतिक क्षेत्र में अरबों का महत्व दिन प्रति घट रहा है । इसका रहस्य है
काबे को सर्वश्रेष्ठ स्थान घोषित करना,
काबे को परम पावन स्थान घोषित करना,
काबे की यात्रा को मुसलमानों के लिए अनिवार्य घोषित करना जिससे अरबों को आर्थिक लाभ (तेल हो नहो) हो,
अरबी कुरआन को अल्लाह का संदेश बनाना,
काबे की मूर्ति वाले अल्लाह को इस्लाम का भगवान बनाना ,
अपने आप को अल्लाह और मुसलमानों में मध्यस्थ बनाना,
यह घोषित करना कि अरबों का शत्रु मुहम्मद का शत्रु है,
परिणाम स्वरूप मुसलमान अरब संस्कृति को अपनी संस्कृति से श्रेष्ठ मानते हैं । एक तुर्की को छोड़कर सब देशों के मुसलमान अपनी राष्ट्रीय पहचान के विरुद्ध केवल मुसलमान कहलाना चाहते हैं । उनका अपना कोई इतिहास नहीं जिस पर उन को गर्व हों ।

इतिहास में इसकी तुलना यहूदियों से की जा सकती है । जेरूसलम के प्रेम में अन्धें यहूदियों ने कभी भी किसी देश को नहीं अपनाया । अपने राष्ट्र के इस अभाव के कारण यहूदियों को बहुत कष्ट उठाने पड़े । परन्तु यहूदियों के इस विचार का कुछ तो आधार है । इस्राईल उनका मूल देश है । और वे सदा वहां लौटना चाहते थे । अब वहां लौट कर उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित कर ली है ।

दूसरे देशों के मुसलमानों की अवस्था इसके विपरीत है । अरब देश उनका अपना देश नहीं परन्तु वे इस्लाम के नाते अरब देश को अपना मूल देश मानते हैं जो कदापि वास्तविकता नही । न तो अरब देश उनको स्वीकार करेगे और नहीं अरब देशों में सौ करोड़ मुसलमानों को बसाने की क्षमता है ।

मुहम्मद अपने आप को इस्लाम की नींव और स्वर्ग दिलाने का एकमात्र साधन बना कर दिए और पतंगे जैसी स्थिति बना दी है । पतंगे बिना कारण अपने आप को भस्म करने पर उत्सुक हैं । यही दशा हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंग्लादेश के मुसलमानों की है ।

आज से 1000 साल पूर्व हिन्दुस्तानी धनी, वीर और आविष्कारी थे । हिन्दुस्तान के धन को लूटने के लिए उन बार बार विदेशियों ने आक्रमण किए । यह मिथ्या है कि हिन्दुस्तानवासी कायर थे । अरब आक्रमणकारी 300 वर्ष तक सिन्ध से आगे किसी भी भाग को जीत न सके । धीरे धीरे जैसे ही तुर्की के कारण और देशों में इस्लाम की सत्ता बढ़ी । हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने हिन्दुस्तान के राष्ट्र से नाता तोड़ लिया ।

इस्लाम के कारण वे हिन्दुस्तान को एक सराय के समान समझने लगे । वे अरब देश को अपना देश मानने लगे और मक्के के गौरव के गान गाने लगे । परिणाम यह हुआ कि वे अपने पूर्वजों की धरती और हिन्दुस्तान के गौरव से घृणा करने लगे । वे तो अपने देश की मस्जिदों को भी अरब देश की मस्जिदों से घटिया मानते हैं । उनके मन में हिन्दुस्तान की संस्कृति के प्रति इतनी घृणा हो गयी कि उनके विचार में उनके पूर्वजों ने जो कुछ भी किया था वह सब घटिया और निरर्थक था । वे तो जिहाद कर के हिन्दुस्तान के मंदिरों और दूसरे धर्मस्थानों को नष्ट करके और लूटमार और हत्या कर के सभी को बल पूर्वक मुसलमान बनाने पर तुले हैं ।अपनी संस्कृति से घृणा के कारण ही उन्होंने अपने देश का बंटवारा करवाया ताकि वे इस्लाम के नाम पर अरब संस्कृति का पालन कर सकें ।

हिन्दुस्तान के मुसलमानों का मक्के से प्रेम के कारण अपने देश का बंटवारा करवाना, अपनी संस्कृति से घृणा और हीनता स्वीकार करना, मुहम्मद की देन है जिसने इस्लाम में अरब देश को ऊंचा और दूसरे सब देशों को नीचा स्थान दिया । दूसरे देशों के मुसलमानों में मानसिक दासता का भाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । मूल कारण तो दरिद्रता और सामाजिक अन्याय है ं। किन्तु मुसलमानों को इसबात का विश्वास है कि अन्त में मुहम्मद उन्हें स्वर्ग दिलवाएगा जहां पर

सब पदार्थों के साथ हूरें उनका स्वागत और उनकी हर इच्छा पूरी करेंगी जो पृथ्वी पर दरिद्रता भोगने के दुःख को भुला देगा ।

मुहम्मद के स्वर्ग दिलवाने का अन्ध विश्वास ही उनके जीवन का सार है । इस के बिना उनका जीवन नीरस हो जाएगा तथा वे दरिद्रता और सामाजिक अन्याय को सहन न कर पाएगें । मुल्ला और राजनीतिक इस महान आपत्ति को और बढ़ाते हैं । वे मुहम्मद पर अन्धविश्वास को प्रोत्साहन देते हैं ताकि उनकी अपनी सत्ता बनी रहे । **दुःख तो इस बात का है कि ये मुल्ला और राजनैतिक कपटी हैं । अधिकतर तो इस्लाम में विश्वास भी नहीं करते । उनके लिए तो इस्लाम अपनी इच्छा पूर्ति के लिए एक अच्छा साधन है ।**

मुसलमानों की यह विचारधारा उन देशों तक सीमित नही । जिन देशों में अब मुसलमानों का निवास है वहां पर भी यही स्थिति है । उदाहरण स्वरूप इंगलिस्तान में उन्होंने अपनी संसद बनाई हुई है जो देश द्रोह के समान है ।जब इस्लाम में प्रजातंत्र का स्थान ही नहीं तो इस संसद का क्या अर्थ ? मुल्ला लोग इस प्रकार इस्लाम मत के प्रयोग से अपना उल्लू सीधा करते हैं । मुसलमानों की स्पेन और बोजनिया (Bosnia) में जो गति हुई है वैसी ही इंगलिस्तान में भी होगी क्योंकि मुसलमानों और उनकी संतान की विचार धारा और कर्म इंगलिस्तान के विरुद्ध हैं और ये लोग इंगलिस्तान की उदारता को नहीं अपनाते । और तो और अधिकतर मुसलमानों को इंगलिस्तान से तनिक भी प्रेम नहीं । यदि इंगलिस्तान इतना बुरा देश है तो वे दूसरे देशों से इंगलिस्तान आए क्यों हैं ? यह मुल्ला इतना भी नहीं सोचते कि वे अपने स्वार्थ के लिए मुसलमानों का भविष्य नष्ट कर रहे हैं । मुहम्मद अपने देश की राष्ट्रीयता का प्रतीक था । परन्तु मुसलमान अपने देशों के विरुद्ध कार्य करते हैं ।

हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंग्लादेश के मुल्लाओं और मुसलमानों को कब समझ आएगी कि यूरोप के लोगों को अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व है और उन पर अरब संस्कृति का जादू नहीं चलेगा । उनको चाहिए कि वे अपने राष्ट्रीय अस्तित्व को पहचाने और उन पर गर्व करें ।

विदेशी धर्म सिद्धान्त (जिस का एकमात्र उद्देश्य अरबों की सत्ता का गुणगान करना है) में अन्ध विश्वास करने वाले मुसलमान स्वयं ही अपनी राष्ट्रीयता और स्वाभिमान का अपमान सहते हैं वे बदले में स्वर्ग में हूरों और सुकुमार लड़कों के उपलब्ध होने के सपने देखते हैं ।

मुल्ला लोग इस्लाम को प्रेम और समानता का अन्तर्राष्ट्रीय मत बता कर यह कहते हैं कि इस्लाम मानव जाति की सभी समस्याओं का समाधान है । सत्य तो यह है कि इस्लाम के अधिकतर सिद्धान्त दूसरे मतों से लिए गए हैं और वे आधुनिक काल में निर्रथक हैं ।इसीलिए मुसलमान देश इस्लाम का गुणगान करते हैं पर पश्चिमी विधानों का पालन करते हैं ।

इन सब बातों से स्पष्ट है कि वास्तव में इस्लाम अरब राष्ट्रीयता का साधन है जिसका उद्देश्य दूसरों पर अरब संस्कृति ठोसना है । हिन्दुस्तान, मिस्र और ईरान का इतिहास इस बात का साक्षी है ।

मुल्ला लोग और राजनीतिक इस्लाम के धन्धे से अपनी सत्ता जमाते हैं । इसीलिए वे दोनों दन इस्लाम की सार्थकता को बढ़ चढ़ कर बताते हैं और जो कोई उनसे सहमत नहीं उस पर " काफिर " " इस्लाम निन्दक" आदि का फतवा लगाकर मुसलमानों को उनके विरुद्ध भड़काते हैं । वे छल कपट से अपना धन्धा खूब चलाते हैं ।

एक सच्चा मुसलमान मत विरोध पर हिंसा का प्रयोग नहीं कर सकता क्योंकि कुरआन में लिखा है:

"मत के विषय में जबरदस्ती अनुचित हैं" और कहता है

" .... अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो । " (2 : 111)

यह पुस्तक मुसलमानों को चुनौती है । यदि वे निष्कपट हैं तो आएं और अपने दृष्टिकोण को सिद्ध करें ।